मूल्य रु. ५-००

मासिक

श्री स्वामिनारायण

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महीने की ११ तारीख • सलंग अंक १०६ • फरवरी-२०१६

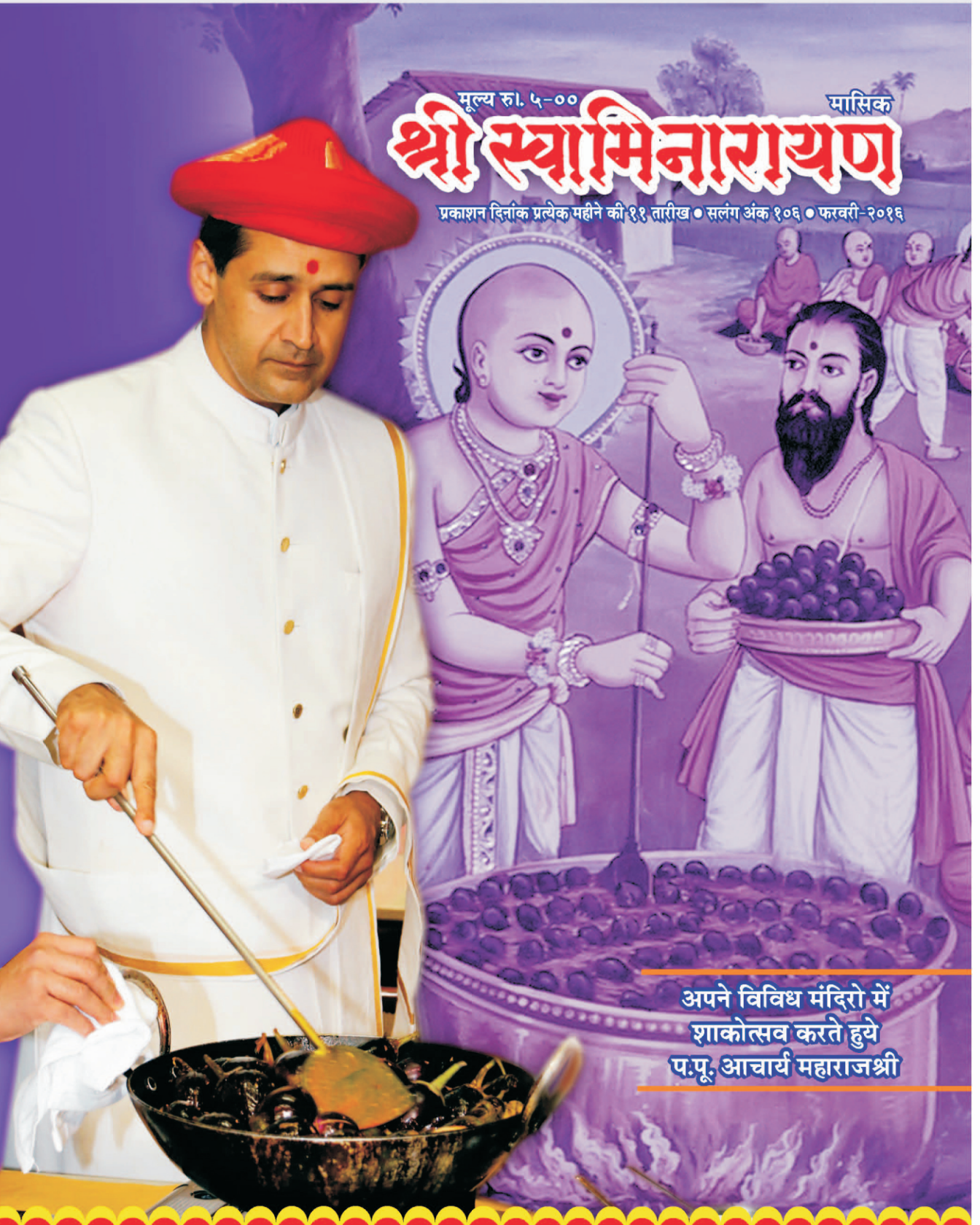

अपने विविध मंदिरो में
शाकोत्सव करते हुये
प.पू. आचार्य महाराजश्री

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

(१) वर्तमान में प.पू. बड़े महाराजश्रीने पाकिस्तान के कच्छ बोर्डर की मुलाकात ली थी । प्रत्येक विषम परिस्थिति में विरान प्रदेश ऐसे कच्छ के सरहद पर हम सभी की रक्षा के लिये कठिन फर्ज बजाने वाले जवानों को पू. बापजीने हाल समाचार पूछा था । साथ में भुज मंदिर के संत भी आये थे । संत तथा सैनिक दोनो संसार से अलिप्त रहकर स्वयं के कर्तव्य पर आरुढ रहने से दोनों के बीच साम्यता दिखाई दी थी । पू. बड़े महाराजश्रीने प्रत्येक सैनिक को अपने मंदिर का प्रसाद दिया था । (२) काश्मीर के बाढ पीडित अहमदाबाद आकर निःसहाय स्थिति में कालुपुर स्टेशन के पास आश्रय लिये थे । इसकी जानकारी अपने प.पू. महाराजश्री को हुई, उन्होंने अपने मंदिर की तरफ से जीवनोपयोगी सभी वस्तुये प्रदान करवाकर मानवधर्म की शिक्षा दी है । (३) नारायणपुरा मंदिर द्वारा आयोजित शाकोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी की समूह आरती उतारते हुये पू. महाराजश्री तथा संत । (४) शिकागो मंदिर में धार्मिक शिबिर का प्रारंभ करते हुए संत-हरिभक्त ।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - ९ ● अंक : १०६

फरवरी-२०१६

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	गौमाता की जय	०७
०४.	अविरत विचरण करते हुए चरण	०९
०५.	प.पू. बड़े महाराजश्री की कच्छ सरहद पर मुलाकात	१२
०६.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१३
०७.	सत्संग बालवाटिका	१४
०८.	भक्ति सुधा	२०
०९.	सत्संग समाचार	२३

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

अस्मदीयम्

परमकृपालु परमात्मा श्री स्वामिनारायण भगवानने हम सभी के लिये इस लोक में तथा परलोक में सुखी होने के लिये बहुत सारी उपाय शिक्षापत्री जैसी छोटी पुस्तिका के २१२ श्लोको के माध्यम से समझाये हैं। वसंत पंचमी के दिन यह अलौकिक शिक्षापत्री अपने सर्वोपरि सभी अवतारों के अवतारी श्री स्वामिनारायण भगवानने स्वयं लिखकर हम सभी को सुखिया करने के लिये दिया हैं। श्लोक २१० में स्पष्ट लिखें हैं कि जो दैवी सम्पत्ति से युक्त हैं। उन्हे यह शिक्षापत्री देना, लेकिन जो आसुरी जन हों उन्हें कभी नही देना। इस छोटी सी शिक्षापत्री की एक-एक आज्ञा का जो पालन करेगा, वह सभी प्रकार से सुखी होगा। हम सभी का कितना अहोभाग्य है कि इस सत्संग में जन्म हुआ है तथा सर्पोपरि भगवान, सर्वोपरि धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री मिले हैं। आप सभी इतना निश्चित समझें कि कल्याण हो चुका है। इसमें शंका का स्थान नहीं है। विशेष तो आप सभी इस वसंत पंमची को श्रीमद् शिक्षापत्री का नित्य विशेष रुप से वांचन-पालन करके जीवन में उतारने का प्रयास कीजिएगा। जिन्हें वांचने न आता हो वे लोग शिक्षापत्री का पूजन करेगे। शिक्षापत्री को जहाँ-तहाँ नहीं रखना। स्नान किये विना स्पर्श नहीं करना। शिक्षापत्री स्वयं श्रीहरि का वांड्मय स्वरूप है।

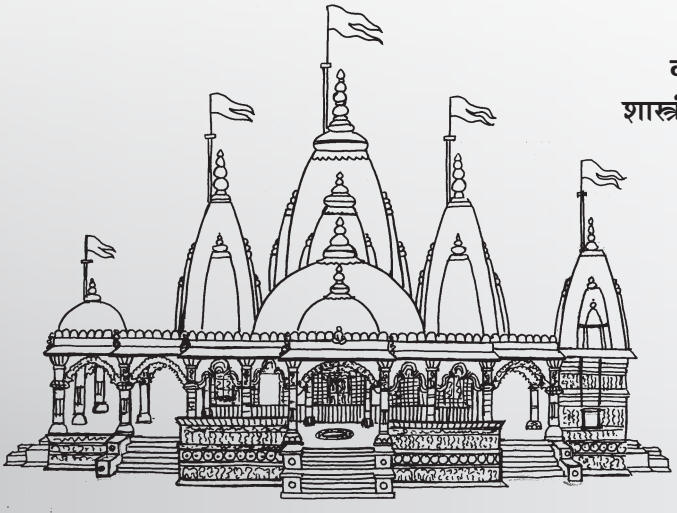

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की

रुपरेखा

(जनवरी-२०१६)

१-२	श्री स्वामिनारायण मंदिर हेरो लंडन रजत जयंती पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
६	श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर (से-२३) भगवत कृपा पर्व प्रसंग पर पदार्पण।
७	श्री स्वामिनारायण मंदिर बलोल (भाल-मूलीदेश) दशाब्दी पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
८-९	भुज (कच्छ) पदार्पण।
१०	श्री स्वामिनारायण मंदिर बालवा पारायण प्रसंग पर पदार्पण।
११	श्री स्वामिनारायण मंदिर मणीयोर (इडर देश) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
१३ से २६	विदेश धर्मप्रवास - श्री स्वामिनारायण मंदिर लंडन बिल्सडनलेन पारायण प्रसंग पर पदार्पण, वहाँ से अमेरिका पदार्पण, वहाँ से चेरीहील मंदिर शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण, टोरोन्टो केनेडा श्री स्वामिनारायण मंदिर पदार्पण।
३०	श्री स्वामिनारायण मंदिर धूलकोट (मूली देश) शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
२१	श्री स्वामिनारायण मंदिर मोडासा (जि. साबरकांठा) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।

श्री स्वामिनारायण

श्री स्वामिनारायण म्युजियम

पंचम वार्षिकोत्सव

आमंत्रणम्

सर्वावतारी सर्वोपरी श्री स्वामिनारायण भगवान की १४९२ प्रसादी की दिव्य अलौकिक वस्तुओं का दर्शन स्थल ''श्री स्वामिनारायण म्युजियम नारायणपुरा-अहमदाबाद का पांच वर्ष पूर्ण होने से पंचम वार्षिक पाटोत्सव आगामी फाल्गुन शुक्ल-३ ता. ११-३-१६ शुक्रवार (श्री नरनारायणदेव पाटोत्सव) के शुभ मंगल दिवस पर रखा गया है। इस अवसर पर दर्शन-पूजन का लाभ लेने हेतु सभी त्यागी-गृही, भाई-बहन को हमारा निमंत्रण है।

प.पू. बड़े महाराजश्री

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

समूह महापूजा
समय : दोपहर २-०० बजे से ४-००
स्थल : श्री स्वामिनारायण म्युजियम

कार्यक्रम
सत्संग सभा तथा दाताओं का सन्मान तथा आशीर्वचन - सायंकाल ४-३० से ६-३०
भोजन प्रसाद सायंकाल ६-३० बजे
स्थल : गोपी पार्टी प्लोट,
ओगणज चार रास्ता, रींग रोड, अमदावाद

फरवरी-२०१६ ००६

गौमाता की जय

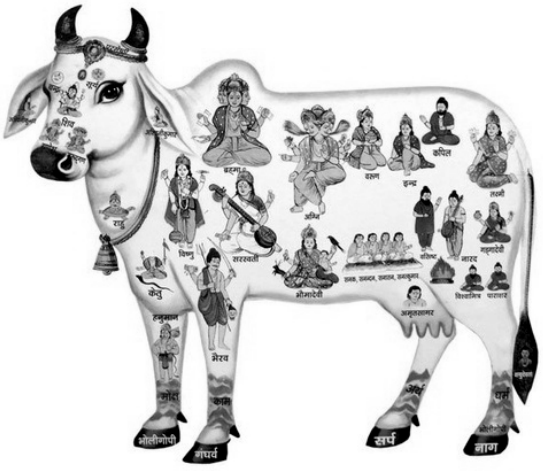

गौमाता की जय

– साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

श्रीमद् भागवत महापुराण के आठवे स्कन्धके छठे मन्वन्तर में क्षीर सागर में मन्दराचल पर्वत से देव तथा दावन साथ मिलकर समुद्र मंथन किया । उस में से १४ रत्न निकले । यह कथा वेदव्यासजीने भागवत में लिखी है । उस समुद्र में से काम धेनु गाय के साथ पांच अन्य और गायें उत्पन्न हुई थी – नंदा, सुभद्रा, सुरभि, सुशीला तथा बहुला – इन्हें लोकमाता कहा जाता है । देवता तथा दानवों के परिश्रम रुपी फल से प्राप्त गौमाता ऋषियों को दे दी गई ।

गौमाता का पुराण में पृथ्वी के रुप में वर्णन मिलता है । गौमाता में सम्पूर्ण ब्रह्मांड का निवास है । इसके अलांवा गाय को भक्तितत्व का प्रतीक माना जाता है । गौमाता में सभी देवों का निवास है . ६ अंग के साथ चारों वेद गौमाता में प्रतिष्ठिति है । शींग के एक मूल में ब्रह्माजी, दूसरे में विष्णुजी का निवास है । शींग के अग्रभाग में पृथ्वी के सभी तीर्थो का निवास है । शींग के मध्यभाग में गिरिजा पतिभोलानाथजी विराजमान है । गौमाताजी के ललाट में जगतजननी देवी गौरी, नाक में कार्तिकेय, अग्र भाग में शेषनारायण, कानों में अश्वनी कुमार, नेत्रों में सूर्य तथा चन्द्रमां, दांतों में अष्टवसु, जीभ में वरुणदेव तथा सरस्वती, गंडस्थल में यमदेव तथा यक्षराज, ओष्ठ में संध्या, ग्रीवा में इन्द्र, चरणो में स्वयं धर्म, खुर में गन्धर्व, पृष्ठ भाग में इग्यारह रुद्र, संधिमें वरुण, केश में सूर्य, कपाल में मानव, गौमूत्र में गंगा-यमुना इस तरह से सभी अंगो में देवताओं का वास है । संक्षेप में गोमाता के शरीर में ३३ कोटी देवताओं का निवास है । गौपूजन से सभी देवताओं के पूजन का फल मिलता है । समुद्र मंथन में से प्राप्त कामधेनु के रक्षण का भार संत तथा ऋषियों ने ली थी । गौमाता के ६ मुख्य अंग गिने गये हैं । गोमय, गोरोचन, मूत्र, दूध, दहीं, घी ए अत्यन्त पवित्र तथा शुद्धि के साधन है । गोमय (गोबर) में से बिल्ववृक्ष उत्पन्न हुआ है, इस में लक्ष्मी का वास है । गोबर मे से कमल उत्पन्न हुआ । गौमूत्र से गुग्गुल बना । सभी देवताओं का दूधआहार है । जगत की सभी वनस्पतियों का बीज दूधमें से उत्पन्न होता है । दूधसभी औषधियों का तत्व है । दहीं मांगलिक पदार्थ के लिये औषधिहै । घी जगत का अमृत है । अमृतत्व में से घी उत्पन्न हुआ है । जो सभी देवों की तृप्ति का साधन है । ऋषि-मुनि गोपाल का रक्षण करते थे । भगवान श्रीकृष्ण ऋषि-मुनि गोपाल का रक्षण करते थे । भगवान श्री कृष्ण गाय चराने जंगल में जाते थे । इसीलिये एकनाम गोपाल भी पडा । गोवर्धन पर्वत धारण किये इसी लिये गोवर्धक नाम है । गायों का पालन करना ही गोवर्धन है । गोवर्धन पर्वत धारण करने जैसा कठिन काम है, गायों की सेवा करना । भारत देश खेती प्रधान देश है, देस के सभी किसान अपने घर पर

गोमाता को अवश्य रखकर पालन करते हैं। लेकिन कुछ वर्षो से गायों का पालन करने वाले वर्ग अब शहर में रहना पसंद करता है। परंतु अपना भविष्य तो जहाँ गायें है वही है। आगे भविष्य में निश्चित एक समय ऐसा आयेगा कि शहर को छोडकर गावों में रहना पडेगा। अपने देश के माननीय राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी ने दिल्ली-राष्ट्रपति भवन में गोशाला बनवाई है। यह देश के लिये गौरव की बात है तथा अनुकरण करने लायक है।

अपने ऋषि आश्रम में या किसी धर्म स्थान में अपने जंगल-पर्वत में रहकर गायों की सेवा करते और आराधना करते थे। जब साधु संत प्रजा के साथ नगरो में रहकर धर्मस्थान या आश्रय बनाये तब गोशाला, पाठशाला, धर्मशाला, भोजन शाला, व्यायाम शाला इत्यादि पांच धर्मस्थानों को धर्म का मुख्य स्थान मानकर निर्माण करावाये।

पांच शाला जहाँ पर हो उसे ही धर्मस्थान कहा जायेगा। वहीं पर त्यागी-साधु, सन्यासी-संत, ऋषि मुनि को रहने का आश्रय मिला। गौशाला से गौमाता का संवर्धन होता है। पाठशाला से सद्विद्या, ब्रह्मविद्या, संस्कृत विद्या का परंपरागत शिक्षण प्राप्त होता है। इस में कोई शुल्क लिया नहीं जाता। जहा लेने-देने की व्यवस्था नहो वहीं पाठशाला है, अन्यथा व्यापार कहा जायेगा। धर्मशाला का मतलब जहाँ पर भेदभाव के विना रहने का आश्रय, भोजनशाला- अतिथि-यात्रियों को विना मूल्य के भोजन देना, व्यायामशाला-जहा पर शारीरिक व्यायामकी सुविधा तथा शिक्षण दिया जाय ऐसे स्थानों को धर्मस्थान कहा जायेगा।

आजभी अपने अनेक मंदिरो में गोशाला विद्यमान है। जेतलपुर में संस्कृत पाठशाला आदि आचार्य अयोध्यप्रसादजी महाराजश्रीने प्रारंभ की थी जहाँ पर अद्यावधिसंस्कृत शिक्षण विना मूल्य के दिया जाता है। अपने प.पू. आचार्य महाराजश्री के निवास स्थान पर सुंदर गोशाला है।

गोदान उत्तम सर्वश्रेष्ठ परिपूर्ण दान है। जब जब जन्मादि मंगल प्रसंग आये उस समय गोदान की परंपरा है, आज भी विवाह प्रसंग में गोदान का विधान चरितार्थ होता है, इस अवसर पर मंगल गीत गोदान से संबन्धित गाये जाते है। भगवान श्री स्वामिनारायण जब प्रगट हुये उस समय पिता धर्मदेव ने ५ लाख गायों का दान किया था। नंद बाबा भी १ कोटि गायों का दान किये थे। राजा-महाराजा के पास जब कोई ब्राह्मण ऋषि आते तब गौदान किया जाता था। आज दान लेने वाले दान की परिभाषा को अपनी रुचि के अनुसार स्वार्थी बना दिया हैं। लेकिन गोदान जैसा श्रेष्ठ कोई दान नहीं है। यह बात सभी पुराण वेद धर्मशास्त्रमों में निरुपित है।

दिवंगत आत्मा के कल्याण हेतु वैतरणी पार करने के लिये गौ पूजन किया जाता है। आत्मा की उत्तर क्रिया में गौदान किया गया हो तो मुक्ति अवश्य होती है।

गढडा में दादा खाचर के दरबार में गायों की देखरेख स्वयं श्रीहरि करते थे। अपनी दृष्टि से उन्हें आनंदित करते अपने दर्शन का सुख देते।

घर से बाहर निकलते समय यदि गाय का दर्शन हो गया तो निश्चित समझिये कि आपका कार्य संपन्न हो गया। श्रीमद् भागवत में मनु के पुत्र उत्तानपाद राजा की पत्नी सुरुचि तथा सुनीती थी। सुरुचि ने सुनीति के पुत्र ध्रुव को बारंबार जान से मार डालने का प्रयास करती रही। फिर भी ध्रुव की मृत्यु नहीं हुई। तब सुरुची ने सुनीती से इसका कारण पूछा। उत्तर में सुनीतिने कहा कि मैं प्रत्येक वर्ष में कार्तिक शुक्ल द्वादशी को गोवत्स द्वादशी का व्रत करके सवत्सागौ का पूजन करती हूँ, इससे मेरे पुत्र को मृत्यु स्पर्श नहीं कर सकती। इसी लिये ध्रुवजी अपने माता-पिता के साथ आज भी ध्रुव पद को प्राप्त करके देवलोक में विराजमान हैं।

पृथ्वी पर जब जब अधर्म की वृद्धि होती है तब तब भार सहन न होने के कारण गाय के स्वरुप में पृथ्वी

पेईज नं. ११

अविरत विचरण करते हुए चरण

- हजुरी वनराज भगत (श्री स्वामिनारायण बाग - अहमदाबाद)

भगवान श्री स्वामिनारायणने अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव तथा वडताल श्री लक्ष्मीनारायणदेव इस प्रकार दो पीठ स्थानों की स्थापना की। अपने गोद लिये हुए पुत्रों को सत्संगियों के गुरु पद पर स्थापित किया। अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री को धर्मधुरा सौंप दी। इस गादी पर आज श्रीहरि के सांतवे वंशज आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री विराजमान है।

लालजी स्वरुप की बाल्य अवस्था से गादीस्थ आचार्यश्री होने तक उनके चरण आज भी सत्संग में अविरत विचरण कर रहे हैं। उनके करकमलो में सदैव परोपकार में कार्यरत है। मन में श्रीहरि का अखंड स्मरण है। मस्तिष्क सदैव श्री नरनारयणदेव के चरणों में झुका रहता है। दोनो हस्तकमलो से संतो हरिभक्तों को वंदन करते हुए, मुख कमल पर हास्य के साथ, नेत्रो से अखंड प्रेमकी दृष्टि की वर्षा करते हुए, मुखकमल से सदैव मंगलमय वाणी का उच्चारण करते हुए ऐसे आचार्य शिरोमणि प.पू.ध.धु. १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के दर्शन मात्र से जीवन में शांति का एहसास होता है।

सत्संग में करीब ६० शिखरी तथा ८०० जितने हरिमंदिरो की व्यवस्था उनकी देखरेख में होता है। तमाम संस्थाओं का कार्य कानून-कायदे भी मर्यादार्थ सरलता से सम्पन्न हो यह एक भगीरथ कार्य है। सभी छोटे बड़े संतो हरिभक्तों को प्रसन्न रखना और सभी प्रसंगो में समय से उपस्थित होने हेतु समय का आयोजन करना भी एक दुष्कर कार्य है। वर्तमान स्थिति में तो विदेशो में भी सत्संग का बड़े पैमाने में प्रचार-प्रसार हुआ है। अंदाजित वीस शिखरी मंदिर उनके मार्गदर्शन में विदेशों में अपनी धर्मधुरा की पताका फैला रहा है। प.पू. बड़े महाराजश्री का रजत-सुवर्ण जंयती महोत्सव उनके मार्गदर्शन के अनुसार जिस प्रकार मनाया गया। वह उनकी व्यवस्था की कार्यदक्षता का उत्तम दृष्टांत साबित हुआ है। और सत्संग में उत्तरोत्तर वृद्धि होती ही जा रही है। इसीलिए समस्त संप्रदाय बहुत ही हर्ष और गौरव का अनुभव करता है।

अपनी इस मासिक पत्रिका में विटामिन रुप से प्रसिद्ध होने वाली महिने की उनकी विचरण के विषय में निर्देश पढने से हमें यह प्रतीत होगा की यह महापुरुष सत्संग समुदाय के लिये, विनम्रता का श्रेष्ठ उदाहरण है। भूख-प्यास-थकान, नींद आदि शारीरिक मुशीबतों को भूलकर हरिभक्तों के घर पधरावणी करना, धार्मिक सभाओं में अनपी उपस्थिति देना, पाटोत्सवादि महोत्सवों में स्वहाथों से देवपूजा करना, बिमार संतो-हरिभक्तों को दर्शन देने हेतु किसी भी समय विचरण करना, युवा शिबिर का आयोजन तथा व्यवस्था, मंदिर के माध्यम से चलने वाली स्कूल-कोलेजो की देखभाल करना, देवदर्शन हेतु पदयात्राए करना, यह सभी कार्य श्रीहरि के प्रत्यक्ष आशीर्वाद से ही संभव हो सकता है। देहधारी को देह के धर्म अनुसार ही आचरण करना पडता है। अपने संतानो को भी समाज को सौंपकर मे अति विनम्र महात्मा सदैव मूल सेवा का ही आग्रह रखते है। उन्होंने सदैव कहा है कि, सच्चे भक्तजनों की कभी शिकायत नही करनी चाहिए, जितने भी प्राप्त साधन हो उतने में ही अच्छा और सच्चा कार्य कर लेना चाहिए तो ही श्री नरनारायणदेव प्रसन्न होंगे।

जब कोई संत या हरिभक्त अपना दु:ख या मुसीबत उनसे कहता है तो वह धीरजता से सुनकर अपने भावपूर्ण आवाज में श्री नरनारायणदेव से प्रार्थना करने को कहते हैं। स्वयं वे भगवान के पुत्र है, भौतिक तथा आध्यात्मिक रुप से सक्षम है फिर भी कभी नहीं कहते

की ''हम आपका दु:ख दूर करेंगे।''

अतिशय मितभाषी तथा स्पष्ट वक्ता की धीर गंभीर वाणी का हमारे मानसपट पर गहरी असर होता है।

अत्याधुनिक म्युझियम की व्यवस्था हो या नारणपुरा में टर्फ नामांकित स्कूल की रचना हो, रजत-सुवर्ण जयंती महोत्सव का आयोजन हो या विदेश में तैयार होने वाला शिखरी मंदिर इन सभी प्रसंगो और कार्यो में देर रात तक अपनी उपस्थिति देकर दूसरे दिन पुन: अपनी उपस्थिति दिनभर के व्यस्त विभिन्न कार्यक्रमों में अचूक देतें है। फिर भी सत्संग समाज से किसी भी प्रकार की कोई भी मांग की अपेक्षा नहीं है। वे कहते हैं कि सदैव सभी के प्रेम की माँग है हमारी। संतो हरिभक्तों को प्रसन्न करना ही हमारा फर्ज है। ऐसी निराडंबरता और निर्मानीपना वाले ऐसे विप्रवर्य के दर्शनमात्र से ही जीव का कल्याण होता है।

एक बार एक प्रेमी हरिभक्तने आचार्यश्री के चरण प्रक्षालन करके प्रेम से कहा कि महाराजश्री। अपने चरणारविंद की एक छाप मुझे एक कागज में दीजीये। मै उसे पूजा में रखना चाहता हूँ। आचार्यश्रीने एक क्षण का भी विलंब किये विना अपने चरणों को वापस खींच लीया और गंभीर आवाज में स्पष्टरुप से कह दिया. ''भक्तजन ! आपकी उपासना बहुत ही कच्ची है। श्रीहरि के चरणारविंद के अलावा दूसरे किसी के भी चरणारविंद या फोटो को पूजा में नही रखना चाहिए। आपके जैसे हरिभक्त तो हमें भी धर्म के मार्ग से गीरा देंगे। यह सुनकर हरिभक्त को तुरंत अपनी भूल का एहसास हो गया। बहुत आग्रह पूर्वक माफी मांगी। श्रीजी के वचनो की जिसको सदैव मनोवृत्ति है ऐसे महाराजश्रीने भावपूर्वक कहा है कि, सिंहासन में नरनारायणदेव तथा भगवान सिवाय अन्य कीसी को भी अपनी पूजा में नही रखना चाहिए। श्रीहरि के अलावा किसी के समक्ष अपना सिर झुकाने की आवश्यकता नहीं है। नरनारायणदेव का द्रढता से आश्रय रखना चाहिए।

उन्होंने अपने कुटुंब में से फूल के समान लालजी श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री को भी सत्संग सेवा में जोड दिया है। वे अपनी छोटी सी उम्र से ही अपने पिता के कदम पर चल कर धर्म की अनेक प्रवृत्तियों को स्वतंत्र रुप से संभाल रहे है। आचार्य पत्नी प.पू.श्री गादीवाला महाराजश्री भी इस युग में इतनी उच्च शिक्षण पदवी होने के बावजूद भी, संप्रदाय की मर्यादा में रहकर महिला मात्र के गुरु के रुप में अपनी सभी जिम्मेदारियों का वहन कर रही है। समर्थ होने के बावजूद सामर्थ्यता के साथ अपनी जिम्मेदारियों का श्रेष्ठता से बहन एक उत्तम उदाहरण है। सत्संग की महिलाओं का ग्रूप बनाकर एरिया अनुसार महिला सभाओं को शुरु करवाया, प्रबोधिनी एकादशी जैसे पवित्र दिवस पर पूरी रात जागरण का कार्क्रम शुरु करवाया, हरिद्वार की भांति गंगामैया की आरती की तरह संध्या आरती छपैया में नारायण सरोवर की भी शुरु करवायी, सांख्ययोगी बहनों की व्यासपीठ पर वरणी करके उनसे महिलाणों की सभा में कथा-पारायण का कार्यक्रम शुरु करवाया। इस प्रकार अनेक नये धार्मिक कार्यक्रमो में आगे रहकर नियमों का स्वयं पालन करते हुए एक उत्तम उदाहरण स्वरुप स्वयं को स्थापित किया है। ऐसी पतितपावनी जगतजननी महिला धर्मगुरु को अनेकानेक वंदन।

अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव के मंदिर की हवेली में रहनेवाली सांख्ययोगी बाईओ कथा प्रसंग, सभा प्रसंग पर जब भी कहीं बाहर जाना होता था तो रीक्षा में जाती थी। प.पू. गादीवाला महाराजश्री को जब ज्ञात हुआ तो उन्होंने कहा कि, जिन बहनोंने धर्म के लिए, सांख्ययोगी की दीक्षा ली है उनके रक्षण की जिम्मेदारी हमारी है। रीक्सा में जाने से धर्म की रक्षा नहीं हो सकती। इसी लिए सांख्ययोगी बहनों के लिए एक अलग स्पेशियल गाडी की व्यवस्था मंदिर की तरफ से की गयी। धर्म के पालन के लिए उनका इतना झुकाव देखकर सभी को बल प्राप्त हुआ।

प.पू.ध.धु. श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

जब श्रीजी स्वरुप के चिहन समान लाल पगड़ी को धारण करके बिराजमान होते है और उस समय उनके पिताश्री तथा संप्रदाय के निवृत आचार्यश्री प.पू. बड़े महाराजश्री की भी उपस्थिति साथ में हो, चाहे वे वय में ज्ञान में या सामर्थ्य में बड़े होने के बावजूद भी सदैव आचार्यश्री को भक्तिभाव से प्रणाम करके ही स्थान ग्रहण करते हैं। वे कहते हैं कि ''मैं अपने पुत्र को नहीं, परतु संप्रदाय के श्रीजी स्वरुप आचार्यश्री को प्रणाम कर रहा हूँ।' ऐसी उत्तम समझ इस संप्रदाय के अलावा और कही प्राप्त नही हो सकती।

धर्मकुल के हजूरी सेवक के रुप मे मुझे बड़ी सेवा प्राप्त हुई है इसीलिए उनके साथ ज्यादा समय व्यतीत करने का सद्भाग्य प्राप्त हुआ है। शि. श्लो. २६ मे श्रीहरि ने कहा है कि कृतघ्नी के संग का त्याग करना चाहिए। इसीलिए इतना विवेक तो अवश्य रखना चाहिए कि जब गुरु अपने शिष्य के लिए उत्तम दृष्टांत स्थापित कर सकता है तो एक सद्गुणी शिष्य के रुप मे गुरु दक्षिणा मे हमे उनके स्वस्थ दीर्धायु जीवन प्राप्ति के लिए श्री नरनारायणदेव के चरणो मे प्रार्थना करते हुए यथाशक्ति विशेष नियमो का पालन करना चाहिए। शि.श्लोक ७५ के अनुसार जिस जीवन को जितना सम्मान प्राप्त होना चाहिए उतना सन्मान उसे अवश्य प्रदान करना चाहिए। कभी मर्यादा का उल्लंघन नही करना चाहिए। हमें हमारे लिए किसी के प्रति कृतघ्नता को सदैव सन्मानि करते हुए जीवन व्यतित करना चाहिए। शि.श्लो. ३७ के अनुसार स्वश्लाघा स्वमुखेन के अनुसार अपने पुरुषार्थ की महिमा सभी नही करते। इस लेख को पढने के बाद अनेक संतो-हरिभक्तो को अति प्रसन्नता होगी ऐसी मुझे आशा है।

अनु. पेईज नं. ८ से आगे

भगवान की शरण में जाती है। ऐसी पुराणों में कथा है। इसका तात्पर्य यह हुआ कि भगवद् धाम में जाने के लिये एकमात्र गौ में अपार शक्ति है। पृथ्वी देवी स्वयं गौमाता के स्वरुप में रहती है। सभी मानव को पुण्य फल देने के लिये गौमाता का मानव सृष्टि पर बहुत बड़ा उपकार है इसलिये मानव मात्र के ऋण स्वरुप है। उनका ऋण उतारने के लिये सदा सेवा करते रहना चाहिए। पूर्वजो का तर्पण करना हो तो गायका पूजन करके पूंछ पर जल चढाना चाहिए।

रास्ते में आते जाते देवालय आवे तो प्राणाम करने की आज्ञा श्रीहरिने शिक्षापत्री में की है। इसी तरह गौमाता सामने मिले तो उसी तरह वंदन करना चाहिए। भगवान श्रीराम के दादा रघु ने गायका वंदन नहीं किया तो गुरुजीने सात वर्ष तक सन्तान प्राप्ति के लिये गाय चराने का प्रायश्चित दिया। धनतेरस को धन पूजन में पहले के समय में गौमाता का पूजन किया जाता था।

यज्ञ के हवन में गाय के उपल का उपयोग किया जाता है। यज्ञ की भूमि को गाय के गौबर से लीप कर शुद्ध किया जाता है।

जब किसी व्यक्ति का अंतकाल नजदीक हो तब गौमाता के गोबर से लीपकर मृतक को उसी स्थल पर सुलाया जाता है। इसका कारण यह है कि गोबर मं लभ्मी का वास है।

पहले के समय में कच्चे मकान होते थे, नीचे के भाग को गोबर से लीपा जाता था। इससे वातावरण ही नहीं शुद्ध होता था बल्कि सभी लोग निरोग रहते थे।

गाय को हम लोग सूखा घास खिलाते है परिणाम स्वरुप गाय माता हमें ३३ कोटि तत्वों से परिपूर्ण दूधदेती हैं। गाय के दूधको आयुर्वेद शास्त्र में पूर्ण आहार माना गया है। इसी लिये तो अपने ऋषि गाय को ''मा'' का बिरुद्ध दिये हैं। गौमाता के रुप में प्रसिद्ध होकर पुजाती हैं।

प.पू. बड़े महाराजश्री की कच्छ सरहद पर मुलाकात

– प्रफुल खरसाणी (अमदावाद)

आज नैतिक मूल्य को छोडकर जीवन जीनेवाले अनेक लोगों को हम टी.वी. में देखते हैं तथा समाचार पत्र में पढते भी है, परंतु इसी बीच में निष्ठापूर्वक काम करने वाले अपने में से ही वे सरहद (सीमा) के रक्षक होते हैं। अपने सैनिकों को देखकर अपने पन का अनुभव होता है ।

अभी वर्तमान में अपने प.पू. बड़े महाराजश्री पाकिस्तान के कच्छ सरहद पर पधारे थे । अपने भुज मंदिर द्वारा सम्पूर्ण आयोजन किया गया था।

सरहद पर ठन्ढी-गर्मी-बरसात-भूख-प्यास की चिन्ता के विना हम सभी की रक्षा करने के लिये सतत प्रहरी बनकर सेवा करने वाले जवानो से श्रीजी महाराज के अपर स्वरुप ऐसे प.पू. बड़े महाराजश्री स्वयं दर्शन देने के लिये पधारे थे . बापजी कच्छ की सरहद पर सर्व प्रथण बार पधारे थे, परंतु राजस्थान की सरहद तथा बाघा बोर्डर पर इससे पूर्व पधार चुके हैं । इसलिये सैनिकों की अनुशासन शीलता का ख्याल तो था ही परंतु अपनी प्रत्येक सरहद का हवामान तथा अन्य व्यवस्था में भिन्न है।

भुज-अमदावाद से करीब ३०-३५ संत तथा अमदावाद भुज के करीब ११ गाडियों में भहरकर हरिभक्तों का काफिला प.पू. बड़े महाराजश्री के साथ जाने के लिये भुज से प्रातः काल प्रस्थान किया था।

चारो तरफ रण प्रदेश – पशु-पक्षी भी गिने चुने दिखाई दे रहे थे । मानव की तो कल्पना भी नही कर सकते । वेरान विस्तार में इन्डिया ब्रीज की एक छोटा सा जर्जरित हनुमानजी का मंदिर दिखाई दिया । बापूजी के साथ हम सभी वहीं रुके । बापूजीने उन प्रभावशाली हनुमानजी की आरती उतारी । बाहर लगाये हुए अनेको घन्टों से हम सभी ने धन्टानाद किया । वहा उपस्थित अधिकारी द्वारा हनुमानजी की कहानी हम सभी ने सुनी । १९७१ में भारत तथा पाकिस्तान के युद्ध के बाद अपने सैनिको द्वारा वेरान किये हुए पाकिस्तान के विस्तार में से वापस आ रहे थे उस समय अचानक आवाज आई कि हमें भी साथ ले चलो.....'' यद्यपि सैनिक पीछे घूमकर नहीं देखते फिर भी सैनिक जब पीछे देखे तो कोई नही था । सैनिक थोडा आगे और आये तो पुनः वही आवाज-''हमें भी साथ लेते चलो'' । इस समय सैनिकों ने विचार किया कि बहुत दूर तक कुछ दिखाई नही दे रहा है, सब कुछ वियावान है, कुछ है नही, मात्र हनुमानजी की मूर्ति दृश्यमान हो रही है । इसलिये सभी मिलकर इस हनुमानजी की मूर्ति को भारत की सरहद पर ले और आज यहीं पर बिराजमान है । इसके बाद मंदिर की व्यवस्था हो गई और हनुमान दादा को लेजाने का प्रयास भी किया गया लेकिन मूर्ति टस से मस नहीं हुई । अंत में यहीं पर मंदिर बनाना पडा । वर्तमान समय में प्रत्येक सरहद पर अपने सैनिक जाति के भेद भाव को छोड़कर इन हनुमानजी की मान्यता रखते हैं । जिसकी बाधा पूरी हो जाती है वह चाहे जिस सरहद पर ड्यूटी करता हो वह यहाँ आकर घन्ट चढाता है . डीजीटल इंडिया के बीच इस यथार्थता को भी स्वीकार करना है।

इसके बाद इन्डिया ब्रीज से होकर कच्छ के पाकिस्तान सरहद पर पहुंच गये । दोनो तरफ समान जमीन थी । समान आकाश था । समान हवा थी । लेकिन बीच में तार का वाडा बनाया गया था । वहाँ के बीरान जगह के सैनिकों की तथा अपने संतो की तुलना अपने आप हो गयी । दोनो संसार से अलिप्त.... फिर भी संसारी.... बापजी सभी को मगज का पैकेट प्रसाद के रुप में दिए । सभी सैनिको की आखों में जैसे आत्मीजन मिले हो ऐसा अनुभव हो रहा था । वहाँ उपस्थित सभी के नेत्रों में अश्रुजल निकल रहे थे।

वहाँ से हम सभी लोग काले डुंगर पर आये । वहाँ भुज मंदिर द्वारा भोजन की व्यवस्था की गई थी । वहाँ से सभी सफेद रण – धोरणो गये । वहाँ जाने का समय सायंकाल होता है फिर भी हमलोग दोपहर में पहुंचे थे । वहाँ पर अपने संतो तथा देश के सैनिकों के बीच की भेद रेखा अलिप्त हो गई ।

जय हिन्द – जय भारत ।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि जनवरी-२०१६

रु. ५०,०००/-	एक हरिभक्त श्रीजी की प्रसन्नता के लिये - अमदावाद	रु. ५,०००/-	मीनाबहन के. जोषी - बोपल।
रु. १०,०००/-	धीरजभाई के. पटेल - अमदावाद	रु. ५,०००/-	विठ्ठलभाई हीराभाई पटेल - जमीयतपरा । कृते शारदाबहन भावेशभाई
रु. ५,५००/-	झवेरभाई ठुम्मर - बापूनगर		
रु. ५,०००/-	गोसलिया परिवार - गढडा		

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति के अभिषेक की नामावलि (जनवरी-२०१६)

ता. ०३-०१-१६	आकाश पी. चोकसी, बायरन।
ता. ०६-०१-१६	पुष्पाबहन प्रमोददास दवे परिवार - बोस्टन कृते सलीलभाई।
ता. १२-०१-१६	अतुलभाई रवजीभाई वरसाणी, मेलबोर्न-ओस्ट्रेलीया । कृते छोटे पी.पी. स्वामी - महंत गांधीनगर सेक्टर-२
ता. १५-०१-१६	हीराबा सोमदास पटेल - यु.एस.ए. कृते सां.यो. मंजुबा तथा भारतीबा।
ता. १६-०१-१६	(प्रातः) अ.नि. नवनीतलाल त्रिकमलाल वंडरा, नवरंगपुरा। कृते उर्मिलाबहन। (११-०० बजे) संदीपभाई प्रमोदभाई भट्ट, बोस्टन।
ता. १७-०१-१६	दिलीपभाई परमानंद त्रिवेदी - यु.एस.ए. दिगेश सुधाकरभाई - यु.एस.ए.।
ता. २१-०१-१६	काचा टेलर्स - कृते मूलजीभाई - लेस्टर।
ता. २२-०१-१६	भाविन मनजी हीराणी, यु.एस.ए., धनबाई-हीरजी भुडीया फोटडी - वर्तमान लंडन। प्रेमजी करशन पिंडोरीया वर्तमान लंडन, अमृतबहन मनजी भुडीया - वर्तमान - लंडन।
ता. २४-०१-१६	जीतुभाई कन्हैयालाल भावसार, बोस्टन।
ता. २५-०१-१६	जनककुमार गोकलदास पटेल ,लवारपुर, कृते नीत जनककुमार पटेल।
ता. २६-०१-१६	नवीनकुमार घनश्यामभाई पटेल, यु.एस.ए. कृते प्रहलादभाई पटेल - करजीसणवाला।
ता. २८-०१-१६	चेतनाबहन संजय सवजी पिंडोरिया (सूरजपुर) यु.के.।
ता. ३०-०१-१६	हरि रोनकभाई, लोस एन्जलस (एल.ए.)।

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. बड़े महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला २० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

केवल वोडाफोनवालों के लिये

प.पू. बड़े महाराजश्री के स्ववचनवाली कोलरट्युन मोबाईळ में डाउन लोड करने के लिये अधोनिर्दिष्ट करें।

मोबाईल में टाईप करें : **cf 270930** टाईप करें **56789**

नम्बर पर : **S.M.S.** करने से कोलरट्युन प्रारंभ होगा। नोंट : **cf** टाईप करने के बाद एक स्पेस छोड़कर

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

सच्चे मा-बाप कौन ?

(शास्त्री हरिप्रियदासजी, गांधीनगर)

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देव देव

यह श्लोक तो प्राय: सभी को कंठ ही रहता है, कारण यह कि सायंकालीन की संध्या आरती के बाद सभी मंदिरो में यह श्लोक सभी संत-भक्त गाते हैं। इस श्लोक का अर्थ यह है कि - माता-पिता, भाई, मित्र, विद्या, धन सब कुछ यदि हैं तो वे भगवान हैं । यह वात सत्य है, अधोनिर्दिष्ट प्रसंग वांचने से ख्याल आयेगा।

यह वात वेरावल गांव की है। गाँव के रहने वाले लोगों के स्वभाव से ही इस गाँव का नाम वेरावल रखा गया होगा ? मूर्खतापूर्ण कार्य या अपराधसे युक्त जीवन, उद्दंडता पूर्ण रहनी-करनी, अविवेक पूर्ण कार्य देखने को मिलता था। उस में भी अविवेक सभी दु:खोका मूल है। इसगाँव में अविवेकी लोग अधिक थे।

एकबार परममुक्त संतदासजी स्वामी के दर्शन से सभी की मनसापूर्ण हो जाती थी। सभी का मन प्रसन्न हो जाता था। ऐसे संत बदरिकाश्रम, मान सरोवर की यात्रा करके गुजरात की तरफ आ रहे थे । सायंकाल के समय वेरावल गाँव के रास्ते में आये। सायंकाल होते ही अन्धेरा होने लगा। इस गाँव के कुछ उद्धत लोग गाँव के बाहर बैठकर पंचायत कर रहे थे, लोगों की निंदा कर रहे थे।

उन अविवेकी उद्धत लोगो के पास से संतदासजी स्वामी निकले, उपस्थित वे दुष्ट उन स्वामी को चोर मान लिये । अविवेकी को कोई विचार नहीं होता वे लोग यह भी विचार नहीं किये कि चोर-लुटेरा हो तो उसके पास अस्त्र शस्त्र होगा। स्वामी तो खाली हाथ चले आ रहे थे । ऐसा विचार इन अविवेकी को कैसे हो सकता है ? स्वामी को पकड़कर मारने लगे। फिर भी स्वामीजी कुछ नहीं बोले। इससे उन उद्धतों की और उद्धततां बढ गई । कहने लगे कि कुछ बोलता नहीं है। बड़ा चुप्पा चोर है। उसमें से एक डोरी ले आया बाद में उन सभी ने स्वामी को बांधकर धूल फेकने और पत्थर से मारने लगे।

संत दासजी इतने समर्थ थे कि वे एकदृष्टि मात्र करते तो सभी का सर्वनाश हो जाता लेकिन स्वामीजी निर्दोष भाव से बैठे रहे । उन अविवेकियों की उद्धतता बढती गई । उन अविवेकियों में से एक बोला कि यह बहुत खतरनाक चोर लगता है। इसे बांधे रखना ठीक है । दूसरे ने कहा कि इसे बांधने की क्या जरुरत ? हाथ-पैर काट दिया जाय। तीसरे ने कहा कि इसे मार डालें तो काम पूरा हो जाय। इस में चिंता की बात क्या है ? यह दृश्य देखने के लिये पूरा गाँव एकत्रित हो गया । तमासा देखने के लिये बुलाने की आवश्यकता नहीं होती, कथा-वार्ता के लिये कितना प्रचार करना पडता है। लेकिन जैसा गाँव वैसे वहाँ के लोग । किसी को इसका विचार भी नहीं आया। इतनेमें कोई पापी तलवार लेकर तैयार हो गया अन्य भी तलवार लेने लगे । लेकिन महात्माजी भगवान का स्मरण करके शांति से बैठ गये। उन्हें मारने की तैयारी देखकर भगवान स्वामिनारायण से सहन नहीं हुआ। हुआ ऐसा कि सामने से पांच-दश जन का टोला दौडता आया। उसमें एक स्त्री एक पुरुष प्रौढावस्था का तथा पांच-सात युवक दौडते आ गये। वे आते ही ललकारने लगे, खबरदार ! क्यो हमारे पुत्र को बांधकर रखे हो। ये तुम्हारे बाप कहाँ चोर है ? चोर तो तुम लोगो हो पापियो ! इस तरह विकराल रुप देखकर उन सभी का होशहवाश उड गया। संतदासजीने बंदन को छोडवाकर, मां-बाप बनकर भगवान स्वामिनारायण वहाँ से संत दासजीके हाथ को पकड़कर चल दिये। उद्धतो का टोला अवाक रहकर यह दृश्य देखता रहा। सभी के चेहरे पर कालिमा दिखाई दे रही थी। सज्जनो ! वे पांच-दश व्यक्ति और कोई नहीं केवल स्वयं भगवान स्वामिनारायण अनेकरूप में दिखाई दे रहे थे । संतदासजी के माता पिता बनकर महाराजने उनकी रक्षा की । थोडा आगे जाकर वे सभी स्वरूप अदृश्य हो गये। स्वामी तो प्रभु की इस लीला को

॥ શ્રી સ્વામિનારાયણો વિજયતેતરામ્ ॥

પ.પૂ.ધ.ધુ. આચાર્ય ૧૦૦૮ શ્રી કોશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રીની આજ્ઞાથી

શ્રી નરનારાયણદેવ દેશ તાબાનું

શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર - નારાયણઘાટના ૨૦માં પાટોત્સવ તથા જીર્ણોદ્ધારિત મંદિરના ઉદ્‌ઘાટન પ્રસંગે

શ્રી ઘનશ્યામ મહોત્સવ

કથાનો સમય સવારે : ૦૮-૩૦ થી ૧૧-૩૦ ● બપોરે : ૦૩-૦૦ થી ૦૬-૦૦

પ્રારંભ

તારીખ
૨૪-૨-૨૦૧૬
બુધવાર
મહા વદ-૧

પૂર્ણાહુતિ

તારીખ
૨૮-૨-૨૦૧૬
રવિવાર
મહા વદ-૫

પ.પૂ. મોટા મહારાજશ્રી

પ.પૂ.ધ.ધૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રી

પ.પૂ. લાલજી મહારાજશ્રી

: આયોજક :

સ.ગુ.સ્વામી શ્રી દેવપ્રકાશદાસજી - મહંતશ્રી નારાયણઘાટ

સ.ગુ.શા.સ્વા. પુરુષોત્તમપ્રકાશદાસજી (પી.પી.સ્વામી) - મહંતશ્રી ગાંધીનગર (સે-૨)

તથા સમસ્ત સત્સંગ સમાજ એવમ્ શ્રી નરનારાયણદેવ યુવક મંડળ

સ્થળ

શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર નારાયણઘાટ, સુભાષબ્રીજના છેડે, શાહીબાગ, અમદાવાદ. ફોન. ૨૫૬૨૫૯૧૮

શ્રી હરિકૃષ્ણ મહારાજ, શ્રી ધર્મ-ભક્તિ - નારાયણઘાટ

શ્રી હનુમાનજી

અમદાવાદ દેશના આચાર્યોની સ્મૃતી છત્રી

શ્રી ગણપતિજી

પ્રસાદીના હનુમાનજી

પ્રસાદીના શિવજી

પ્રસાદીનું શિવજી મંદિર

પ્રસાદીનું હનુમાનજી મંદિર

હાર્દિક નિમંત્રણ

સર્વાવતારી શ્રી ભગવાનશ્રી સ્વામિનારાયણની અસીમકૃપાથી તથા અમદાવાદ શ્રીનરનારાયણદેવ પીઠાધિપતિ પ.પૂ.ધ.ધુ. આચાર્ય ૧૦૦૮શ્રી કોશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રીની આજ્ઞા અને આશીર્વાદથી, ભગવાન સ્વામિનારાયણે કલ્યાણના માર્ગને સદા પ્રશસ્ત રાખવા સ્વહસ્તે ૯ (નવ) મહાંમદિરોનું નિર્માણ કરીને દેવો પધારાવ્યા એમાં પણ સૌ પ્રથમશ્રીનગર (અમદાવાદ)માં મંદિર નિર્માણ કરાવી મહાપ્રતાપી શ્રી નરનારાયણદેવની મૂર્તિઓ પોતાના બાથમાં લઈ "આ અમારું જ સ્વરૂપ છે" એમ કહી પધરાવ્યા. એ મહાપ્રતાપી ભરતખંડના રાજાધિરાજ શ્રી નરનારાયણદેવની પ્રાગટ્યભૂમિએટલે સાબરમતી ગંગાના કિનારે આવેલું "નારાયણઘાટ"

આદિ સતયુગમાં આ ક્ષેત્ર ધર્મારણ્ય તરીકે ઓળખાતું. આ નદી ગંગા કરતા પણ અનાદિ છે. જે પૂર્વકાળમાં "સાભ્રમતી" ના નામે પુરાણોમાં વર્ણવાયેલી છે. આ નદીના કિનારે ધર્મદેવ અને મૂર્તિદેવી એ તપ કરી ને ભગવાનને પુત્ર સ્વરૂપે પ્રાપ્ત કરવાનું વરદાન મેળવ્યું આ જ નારાયણઘાટમાં ધર્મદેવ-મુર્તિદેવી (ભક્તિદેવી) થકી ભગવાન શ્રી નર-નારાયણ-હરિ-કૃષ્ણ એ ચાર સ્વરૂપે પ્રગટ થયા.

આ પવિત્ર તીર્થમાં ભગવાન શ્રીહરિએ હજારો વખત સંતો સાથે પધારી સાબરમતીમાં સ્નાન કરેલું છે તથા પ્રસાદીના મહાદેવજી તથા અયોધ્યા પ્રસાદજી મહારાજે પધરાવેલ શ્રી હનુમાનજી મહારાજની પવિત્ર ભૂમિઉપર સ્થિત એક નાના હરિમંદિરના સ્થાને પૂ.અ.નિ. ગવૈયા સ્વામી કેશવજીવનદાસજીએ શિખરબદ્ધ મંદિરનું નિર્માણકાર્ય કરી આજથી ૨૦ વર્ષ પહેલા સર્વોપરી શ્રી ઘનશ્યામ મહારાજ તથા ધર્મ-ભક્તિ-હરિકૃષ્ણમહારાજની મુર્તિઓ પધરાવી. એ પ્રતિષ્ઠીત દેવોને ૨૦ વર્ષ પૂર્ણ થવાના પાવન અવસરે સાથો સાથ મંદિરનું નિર્માણકાર્ય તો થયેલું પરંતુ મંદિરની પ્રદક્ષિણાનો ભાગ - ખુલ્લો હતો તેથી ઉનાળા અને ચોમાસામાં ભક્તોને ખુબ અગવડ પડતી તેથી સૌ ભક્તોની માંગણી અને આગ્રહથી પ્રદક્ષિણાને પત્થરના થાંભલા - કમાનોથી સુશોભિત કરી ઢાંકવાની સાથે સમગ્ર મંદિરને બંસીપુરના લાલ પત્થરોથી જીર્ણોદ્ધારિત કરવાનું કાર્ય પણ આરંભ થયું તથા શ્રી હનુમાનજી - ગણપતિજીના દેરા (મંદિર) પણ નવ નિર્માણ કરી એમાં પણ નૂતન મૂર્તિઓ તૈયાર કરવામાં આવી. સાથો સાથ મહાદેવજી મંદિર સંપૂર્ણ જીર્ણોદ્ધાર, નંદ સંતોની છત્રી, રીવરફ્રન્ટ દિવાલ તથા દરવાજાનું કાર્ય પણ કરવામાં આવ્યું. આ સંપૂર્ણ જીર્ણોદ્ધારનું કાર્ય અમદાવાદ મંદિરના સૌ પ્રથમ **મહંત સ.ગુ.સર્વજ્ઞાનંદ સ્વામીની** શિષ્યપરંપરાના **સ.ગુ.સ્વામી લક્ષ્મીપ્રસાદદાસજી**(મારવાડી)ના શિષ્ય **સ.ગુ.સ્વામી દેવકૃષ્ણદાસજી** (કાઠિયાવાડી) તથા **સ.ગુ.સ્વામી કૃષ્ણસ્વરૂપદાસજી**(કાકા સ્વામી) ના શિષ્ય **સ.ગુ.સ્વામી દેવપ્રકાશદાસજીના** માર્ગદર્શન હેઠળ પૂર્ણ થયેલ છે. તો આ સમગ્ર કાર્યની ફલશ્રુતિ સ્વરૂપે સમગ્ર ધર્મકુળના હૃદયપૂર્વકના રાજીપાથી મહાવદ-૧ તા. ૨૪-૦૨-૨૦૧૯, બુધવાર થી મહાવદ-૫ ૨૮-૦૨-૨૦૧૯, રવિવાર પર્યંત શ્રી ઘનશ્યામ મહોત્સવ ઉજવવાનું નિર્ધારેલ છે.

આ મહોત્સવના ઉપક્રમે શ્રીમદ્ સત્સંગીભૂષણ પારાયણ, હરિયાગ, શ્રી હનુમાનજી-શ્રી ગણપતીજી મૂર્તિ પ્રતિષ્ઠા ઠાકોરજીની નગરયાત્રા, જીર્ણોધ્ધારીત મંદિરનું ઉદ્ઘાટન તથા મહાઆરતી, પોથીયાત્રા, અભિષેક, અન્નકોટ, અખંડ ધૂન, શ્રી ઘનશ્યામ જન્મોત્સવ, મેડીકલ કેમ્પ, રક્તદાન કેમ્પ, મહિલા મંચ, રાત્રિય સાંસ્કૃતિક કાર્યક્રમઆદિ અનેક વિધ મંગલ કાર્યક્રમોનું પણ આયોજન કરેલ છે.

આ શુભ પ્રસંગે પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રી, પ.પૂ. મોટા મહારાજશ્રી, પ.પૂ. લાલજી મહારાજશ્રી, પ.પૂ.અ.સૌ. ગાદીવાળા બાશ્રી, પ.પૂ. અ.સૌ. મોટા ગાદીવાળા બાશ્રી, પૂ.શ્રી રાજા સમગ્ર ધર્મકુળ સાથો સાથ ધામો ધામ દેશો દેશથી બ્રહ્મનિષ્ઠ વિદ્વાન સંતો, મહંતો પધારશે. તો આ શુભ પ્રસંગે દર્શન- પ્રવચન- કથા વાર્તા - આશીર્વાદ - પ્રસાદનો લાભ લઈ મોક્ષનું ભાથુ ભરવા પધારવા અમારુ હાર્દિક નિમંત્રણ છે.

કથાના વક્તા પદે **સ.ગુ. શા. સ્વામી શ્રી રામકૃષ્ણદાસજી** (કોટેશ્વર) તથા **સ.ગુ. શા. સ્વામી ચૈતન્યસ્વરૂપદાસજી** (ગાંધીનગર) બિરાજી સંગીતમય શૈલીમાં કથાનું રસ પાન કરાવશે.

-:: પ્રેરણા ::-
સ.ગુ. શા.સ્વામી શ્રી હરિકૃષ્ણદાસજી
(મહંતશ્રી કાલુપુર)

લી.
કોઠારી સ્વામી બાલસ્વરૂપદાસજી તથા પૂજારી શા.સ્વામી દિવ્યપ્રકાશદાસજી,
શ્રી નરનારાયણદેવ યુવક મંડળ,
સમસ્ત સત્સંગ સમાજ, શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર-નારાયણઘાટ

કાર્યક્રમની રૂપરેખા

તા. ૨૪-૨-૨૦૧૬, બુધવાર

- પોથીયાત્રા : સવારે ૭:૦૦ કલાકે

પારાયણના યજમાનશ્રી પ.ભ. ડાહ્યાભાઈ એન. પટેલના નિવાસ સ્થાન (બી-૩૦૧, ચોથે માળે, શિલાલેખ ટાવર, શાહીબાગ) થી નિકળી કથા સ્થળે જશે.

- અખંડ ધૂન પ્રારંભ : સવારે ૮:૩૦ કલાકે
- દીપ પ્રાગટ્ય : સવારે ૯:૦૦ કલાકે
- કથા પ્રારંભ : સવારે ૯:૧૫ કલાકે
- નૂતન સાહિત્ય વિમોચન : સવારે ૧૧:૧૫ કલાકે
- શ્રી ઘનશ્યામ જન્મોત્સવ : સાંજે ૫:૩૦ કલાકે
  (શ્રી સહજાનંદ ગુરુકુળ, કોટેશ્વરના વિદ્યાર્થીઓ દ્વારા)

તા. ૨૮-૦૨-૨૦૧૬, રવિવાર

- મંગળા આરતી : સવારે ૬:૦૦ કલાકે
- ઠાકોરજીનો અભિષેક : સવારે ૬:૦૦ કલાકે (પ.પૂ.ભાવિ આચાર્ય ૧૦૮ શ્રી વ્રજેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રીના વરદ્ હસ્તે)
- શણગાર આરતી : સવારે ૮:૩૦ કલાકે
- પ.પૂ. મોટા મહારાજશ્રી તેજેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રીનું આગમન : સવારે ૯:૦૦ કલાકે
- શ્રી હરિયાગ પૂર્ણાહુતિ : સવારે ૯:૩૦ કલાકે
- કથા પૂર્ણાહુતિ : સવારે ૧૦:૦૦ કલાકે
  (પ.પૂ. મોટા મહારાજશ્રીના વરદ્ હસ્તે)
- પ્રાસંગિક સભા તથા પૂ. સંતોના આશીર્વચન : સવારે ૧૦:૩૦ કલાકે
- અન્નકૂટ આરતી : બપોરે ૧૧:૩૦ કલાકે

તા. ૨૫-૧૨-૨૦૧૬, ગુરુવાર

- સર્વરોગ નિદાન કેમ્પ ઉદ્ઘાટન : સવારે ૧૦:૦૦ કલાકે
- શ્રી સ્વામિનારાયણ ભગવાનનો ગાદી અભિષેક (કથા અંતર્ગત) : સાંજે ૫:૩૦ કલાકે

તા. ૨૬-૦૨-૨૦૧૬, શુક્રવાર

- રક્તદાન કેમ્પ ઉદ્ઘાટન : સવારે ૯:૩૦ કલાકે
- પ.પૂ. આચાર્ય ૧૦૦૮ શ્રી કોશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રીનું આગમન : સવારે ૧૦:૩૦ કલાકે
- શ્રી નરનારાયણ પ્રતિષ્ઠા (કથા અંતર્ગત) : સાંજે ૫:૩૦ કલાકે
  (પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રીના સાનિધ્યમાં)

તા. ૨૭-૨-૨૦૧૬, શનિવાર

- શ્રી હરિયાગ પ્રારંભ : સવારે ૮:૦૦ કલાકે
  (યજ્ઞના આચાર્ય : પૂ. અશ્વિનભાઈ ત્રિવેદી)
- મહાપૂજા પ્રારંભ : સવારે ૮:૦૦ કલાકે
- ગૌદાન : સવારે ૮:૩૦ કલાકે
- ઠાકોરજીની નગરયાત્રા : બપોરે ૨:૦૦ કલાકે
  (શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર - રાણીપ થી વાજતે ગાજતે ધામધૂમથી કથા સ્થળે જશે.)
- જીર્ણોદ્ધારીત મંદિર ઉદ્ઘાટન, દિપમાળા તથા સમૂહ આરતી : સાંજે ૬:૩૦ કલાકે

નોંધ :- કથા શ્રવણ કરવા આવનાર દરેક ભક્તો માટે ભોજન પ્રસાદની વ્યવસ્થા રાખેલ છે.

રાત્રીય સાંસ્કૃતિક કાર્યક્રમ

(દરરોજ રાત્રે ૮:૩૦ થી ૧૧:૦૦ કલાકે)

તા. ૨૪-૨-૧૬ બુધવાર : મહિલા મંચ

તા. ૨૫-૨-૧૬ ગુરુવાર : હાસ્ય દરબાર
(કલાકાર જીતુભાઈ દ્વારકાવાળા તથા રણજીત વાંક)

તા. ૨૬-૨-૧૬ શુક્રવાર : રાસોત્સવ
(કલાકાર પૂરવ પટેલ તથા સાથી કલાકારો

તા. ૨૭-૨-૧૬ શનિવાર : સંત કિર્તન સંધ્યા

- સ.ગુ. સ્વા. શ્રી બળદેવપ્રસાદદાસજી - કાલુપુર
- સ.ગુ. સ્વા. શ્રી હરિજીવનદાસજી - કાલુપુર
- સ.ગુ. શા. સ્વા. શ્રી સુવ્રતસ્વરૂપદાસજી - મુળી
- સ.ગુ. શા. સ્વા. શ્રી વિશ્વસ્વરૂપદાસજી - કાલુપુર
- સ.ગુ. બ્ર. સ્વા. શ્રી મુકુંદાનંદજી - કાલુપુર આદિક સંતો દ્વારા કિર્તનભક્તિ

મહોત્સવ દરમ્યાન બહેનોને દર્શન અને આશીર્વાદ આપવા માટે પ.પૂ. અ.સૌ. ગાદીવાળાબાશ્રી, પ.પૂ.મોટા ગાદીવાળાબાશ્રી તથા પૂ. શ્રીરાજા પધારશે....

સમગ્ર મહોત્સવનું લાઈવ પ્રસારણ

www.swaminarayan.in
તથા
॥ કથા ॥
Live On Katha Channel Ch. No. 555

देखकर अन्तर हृदय में आनंद के साथ स्वीकार करके आगे चल दिये जैसे कुछ हुआ ही नहो । यह वात निष्कुलानंद स्वामीने भक्तचिंतामणी के परचा प्रकरण में उल्लेख किया है। इस वात से यह याद रखना है कि यदि भगवान का दृढ तथा अनन्य आश्रय होगा, श्रद्धा होगी तो भगवान किसी भी स्थिति में भी हमारी अवश्य रक्षा करेंगे । कारण यह कि भगवान ही हमारे सच्चे मां-बाप हैं।

●

सुख का मूल सदाचार

- नारायण वी. जानी (गांधीनगर)

मानव जीवन को सच्चरित्रवान बनाने के लिये भगवान स्वामिनारायणने शिक्षापत्री में कुछ भी नहीं कसर छोडी । आपस में दया-प्रेम बढे इसके लिये शिक्षापत्री में सदाचार के विषय में खूब विस्तार पूर्वक समझाया है । सद्विचार, आचार-विचार - उत्तम विचार । शिक्षापत्री में सदाचार के विषय में समझा कर बड़ा उपकार किया है। जिस तरह माता अपने पुत्र को बड़े वात्सल्य के साथ ऐसा करो-ऐसा मत करो समझाती है उसी तरह शिक्षापत्री की माता की तरह मनुष्य मात्र को सदाचार मय जीवन जीने की उत्तम शिक्षाप्रदान करती है।

सदाचार में आहार शुद्धि भी परमावश्यक है। आज कल समाज में मनुष्य अनेक रोगों से आक्रांत हो गया है । उसका कारण आहार शुद्धि का अभाव । आज तो जहाँ-तहाँ रास्ते में, स्टेशन पर, होटल में, लारियों के ऊपर नास्ता पानी करने की लाईन लगी रहती है। जहाँ कहीं भी रास्ते के बीच में खाने के लिये आज लोग हिचकिचाते नहीं है। मात्र जिहवा के स्वाद के लिये कुछ भी खा सकते है। ऐसे भोजन से मनुष्य अनेक अगम्य रोगो से धिर जाता है।

ऐसे समय पर मनुष्य को कौन रोक सकता है ? हम इतने भाग्य शाली हैं कि जिस तरह माता अपने बालक की रखवाली करती है ठीक उसी तरह शिक्षापत्री मानव मात्र की रखवाली करती है । इस में आहार शुद्धि का बहुत सुंदर नियमन करती है। यदि शुद्ध आहार लिया जाय तो मन शुद्ध होगा । ऐसे शुद्ध मन में विचारभी शुद्ध होगा । जहाँ तहाँ बाजार में मिलने वाला भोजन सद्भाव के विना बनाया होता है लेकिन कमाई करने के लिये तैयार किया जाता है । ऐसे भोजन का सेवन करने वाला व्यक्ति राजस्-तामस के वशी भूत होकर जीवन को बरबाद करता है।

भोजन बनाने वाला भोनज बनाने के समय कैसा विचार करता है, वही विचार भोजन के साथ भोजन करने वाले के मन पर पडता है। इसीलिये तो कहा जाता है ''जैसा अन्न वैसा मन''।

शिक्षापत्री में जो आहार शुद्धि की वात की गई है यदि मनुष्य उसका पालन करने लगे तो सद्विचार के साथ पवित्र तथा निरोगी जीवन जी सकता है । जिस तरह आहार शुद्धि सदाचार का एकभाग है, उसी तरह स्वच्छता का पालन भी सदाचार का एकभाग है। आज चारो तरफ स्वच्छता रखने के लिये निवेदन किया जा रहा है। परंतु श्रीहरिने आज से पौने दो सौ वर्ष पूर्व स्वच्छता रखने के लिये शिक्षापत्री में आज्ञा की है । जहाँ-तहाँ मल-मूत्र का त्याग नहीं करना चाहिए, चहाँ तहाँ थूक ना नही चाहिए इत्यादि आज्ञाये स्वच्छता के लिये की गई है।

सूक्ष्म दृष्टि से विचार किया जाय तो ख्याल आयेगा कि पशु जितनी गन्दकी नहीं करते उससे कई गुना गन्दगी मनुष्य करता है। मनुष्य के द्वारा फैलाई गई गन्दगी को साफ करने के लिये महानगरपालिका करोडो रुपये खर्च करती है। शहरों में बड़ी-बड़ी बिल्डींग की सीढियों के कोने मे, सीढी पर देखे तो शिक्षित कहे जानेवाले लोग थूकते जाते हैं । इससे स्वयं का नाश कर रहे हैं। गन्दगी की वजह से कितने लोग, कितने चेपी रोग इत्यादि से मनुष्य दु:खी हो रहा है।

इस तकलीफ से अपने आश्रित या अच्छे समाज के लोग किस तरह बस सकते है इसके लिये श्रीहरिने शिक्षापत्री में समझाया है । यदि प्रत्येक मनुष्य अपनी फरज मानकर स्वच्छता रखने का प्रयत्न करे तो सरकार का करोडो रूपये बच जाय, जिसका उपयोग देश की सेवा में लग सकता है। मनुष्य को सदाचार से मिलने वाला सुख चाहिये लेकिन सदाचार का पालन नहीं करना है। वह कैसे संभव है तो एक कहावत है - ''बोया पेड बबूल का आम कहाँ से खाय''।

डॉ. के पास जाने पर डॉ. से दवा मिल सकती है लेकिन दवा लेने का उत्तरदायित्व स्वयं का है । दवा न लें तो रोग मिटेगा नहीं । रोग नही मिटे तो इसमें डॉ. का क्या दोष ? इस तरह स्वामिनारायण भगवानने विधि-निषेधकी दवा शिक्षापत्री में बताये हैं, उसी प्रमाण के अनुसार यदि वर्तन करें तो निश्चित ही जीवन सुखी होगा। शिक्षापत्री का लेखन स्वयं श्रीहरिने अपने हाथों से की है। अत: शिक्षापत्री की आज्ञा का पालन ही जीवन को सुखी बना सकता है, अन्यथा नहीं।

॥ भक्तिसुधा ॥

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से)
कार्तिक कृष्ण एकादशी की सत्संग सभा कालुपुर मंदिर हवेली

"प्रशस्त राग से संसार में वैराग्य आता है"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

हम इससे पूर्व यह वात जान चुके हैं कि ''संसार से वैराग्य'' तथा परमात्मा से अनुराग रखना । परंतु संसार से वैराग्य भी न हो तथा परमात्मा के प्रति अनुराग भी न हो तो क्या करना चाहिए ? संसार से वैराग्य अर्थात् राग रहित होना । राग भी दो प्रकार का होता है । प्रथम राग अर्थात् ''मन का लगाव'' किसी भी वस्तु में या व्यक्ति में भी हो सकता है । दाग-द्वेष जड तथा चेतन- दोनो में हो सकता है । श्रीकृष्ण भगवान का वैरभाव से चिन्तन करने वाले शिशुपाल तथा दन्तवक्त्र इत्यादि थे । इसके अलांवा गोपियों की भक्ति प्रेमभाववाली थी । वे भगवान का अखंड चिन्तन करती थी । कोई व्यक्ति हमें परेसान करता हो, ईर्ष्या करता हो तो वह भी चिंतन कहा जायेगा । हम किसी का खराब किये हो तो उसकी डर से भी चिंतन होता है । जिस व्यक्ति या वस्तु के प्रति राग-द्वेष-ईर्ष्या-डर के कारण जो चिंतन होता है वह न हो इशके लिये संपूर्ण कामना से रहित होने पर ही वैराग्य की स्थिति प्राप्त हो सकती है । सम्पूर्ण कामना से रहित तभी होना संभव है जब व्यक्ति सम्पूर्ण समभाव में हो, अर्थात् (न्युट्रल हो, संपूर्ण राग द्वेष से रहित हो) अर्थात् ऐशा होना संभव नहीं । द्वेष से रहित होना संभव है वह इसलिये कि महाराज की आज्ञा है । किसी का दोष नहीं देखना चाहिए, किसी को दु:ख नहीं देना चाहिये । ईर्ष्या नहीं करनी चाहिए । घर के लोगों के प्रति राग सदा बना रहे इसके लिये यहाँ एक दृष्टांत है ।

एक व्यक्ति के बेटे की मृत्यु हो गई । वह महात्मा के पास गया । महात्मा के पास रोते हुये कहने लगा कि मेरा बेटा मर गया है । महात्माजी उसे समझाते हुये कहते हैं कि यही संसार हैं मरना-जीना यह प्रकृति का नियम है । ऐसा कहकर समझाते हैं । थोडे समय के बाद जहाँ महात्मा रहते थे वहाँ से वही व्यक्ति निकला देखा कि महात्माजी अपनी झोपडी में रो रहे हैं । वह महात्मा के पास जाकर रोने का कारण पूछा । महात्माजीने बताया कि मेरी बकरी मर गई, यह सुनकर उस आदमी ने कहा कि महात्माजी ? कुछ दिन पहले जब मेरा बेटा मर गया तो आप बड़ा-बड़ा उपदेश दिये, जब आपकी बकरी मर गई तो क्या रोना ? महात्माजीने कहा कि वह बेटा तो आपका था लेकिन बकरी तो मेरी थी ? इसका तात्पर्य यह कि आसक्ति नहीं रखनी चाहिए । यह कहना सरल है, लेकिन वास्तविक रुप से अनुभव में आये तब दु:ख तो होता ही है । घर परिवार सब कुछ छोड देने से कामना से रहित हो जायेंगे ऐसा नही है । सबकुछ छोडकर जंगल में जाकर माला लेकर भजन कपने से मन शांत हो जायेगा ऐसा नही है, विचार तो चालू ही रहता है । सच्चा कर्म मन से होता है । हम सुनते हैं कि बड़े-बड़े ऋषि मुनि जब जंगल में जप-तप करने जाते तब वहाँ भी माया से मुक्त नही हो सके । कहने का मतलब यह कि माया इतनी बलवान है कि मोह को छोडने के लिये मन को जबरदस्ती समझाना पडता है । कोई व्यक्ति व्यसन को लेकर जन्मता नहीं है । जन्म के बाद कुसंग के कारण व्यसन लग जाता है । ऐसे व्यक्ति को दो-तीन बार कहना पड़ता है । वि व्यसन बहुत खराब है । वह वर्षो पुराने व्यसन को छोडने का प्रयास करता है - फिर भी वह व्यसन छोड नहीं पाता है । जब शरीर खत्म होने की स्थिति पर आती है तब वह कहता है कि शरीर भले छूट जाय लेकिन व्यसन नहीं छोड़ना है । इसके लिये खूब अभ्यास की जरूरत है । घर में छोटा बच्चा हो तो उसे स्कूल में भेंजा जाय तो बड़ी मुश्किली से भेंजा जाता है । उसे लालच देनी पडती है । तब स्वयं के जीवन में पढा-लिखा जैसा दिखाई देने लगता है । बाद में वह अपने ऊपर निर्भर होने लगता है । जिस तरह छोटे बालक को वर्षो तक अभ्यास करना पडता है, उसी तरह हमें भी अनेक जन्मो से संसार के प्रति इतना अगाढ प्रेम हो गया है कि वह कैसे छूट सकता है ? तो उसे छोडने के लिये अभ्यास करना पडता है ।

संसार का मूल अधिक नीचे उतर गया है जिससे भगवान संबन्धी कार्य करने बैठे, पूजा, नित्यनियम या मानसी पूजा करने बैठे तो ऐसा होता है कि कितने जल्दी पूरा हो जाय। जब भोजन सरने बैठेत है तो स्वाद लेकर आसक्त होकर भोजन करते हैं। बहुत करना है - लेकिन महाराज के बताये हुये शास्त्र के अनुसार करना है।

महाराजने इस जगत की रचना की है। यह रचना दु:खी करने के लिये नहीं है। फिर भी आदमी आत्महत्या करता है। चारो तरफ सुख देखकर वैसा आचरण करने से अधोगति को प्राप्त करता है। संसार से आसक्ति छोडने का एक ही रास्ता है नियमित भजन, सत्संग, नित्य अभ्यास, धर्मवंशी आचार्य महाराजखी का साहचर्य, संतो के साथ प्रेम। संसार से आसक्ति घटने का सबसे बडा उपाय यहीं है। दूसरा यह कि संसार के प्रति ऐसा करने से अपन आप वैराग्य की स्थिति हो जाती है। परमात्मा में प्रीति करने से वैराग्य अनपे आप उत्पन्न हो जाता है। भजन करते करते अपना अन्त:करण निर्मल हो जाता है। इन्द्रिया, आत्मा सब कुछ शुद्ध होजाता है। इस लोक में विषयो का बन्धन अति बलवान है। इसलिये उसे हटाने की कोशिष करनी चाहिये। सत्संग के रंग में जो रंगे नही है वे खूब भजन करें। परमात्मा की भजन, परमात्मा की कथा सुनना। मुख से प्रभु के गुण का गान करना। त्वचा द्वारा भगवान का स्पर्श करना। आंख से प्रभु का दर्शन करना। मन से एकचित्त होकर प्रभु का ध्यान करना। बुद्धि से महाराजके स्वरुप का निश्चय करना। अपने आत्मा को सदा निरोगी रखना। आत्मबल के साथ भजन-भक्ति करना। शरीर बिमार होती है आत्मा नहीं। मन दृढ हो तो भगवान सब कुछ पूरा करते हैं। महारा जकी आज्ञा का लोप नही करना चाहिए, जो लोग आज्ञा का लोप करते है वे महाराजके वचन द्रोही है। फिर भी महाराज से जो भी मांगे वे देते है। यदि महाराज का द्रोह किये रहेंगे तो अन्तिम समय में जब महारा जलेने आयेगें तब आंख मिला नहीं पायेंगे। ऐसा करना चाहिए कि महाराज से आंख मिला सके। परमात्मा अपने ऊपर प्रसन्न हो ऐसा कर्म करना चाहिये। इसलिये संसार से वैराग्य हो ऐसी उपाय करनी चाहिये। भजन--भक्ति सत्संग से ये सभी संभव है। महाराज की आज्ञा कापालन करने का प्रयत्न करना चाहिये। इसी में सभी प्रकार का सुख है।

जहाँ सफाई वहाँ पर पवित्रता

- सां.यो. कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

आज विज्ञान खूब आगे बढ गया है। इसकी भौतिक व्यवस्था जैसे-जैसे बढ रही है वैसे-वैसे शुद्धता भी बढ रही है। लेकिन पवित्रता का मापदंड घटता जा रहा है। भौतिक सुख साधन होते हुए भी सभी लोग नाना प्रकार की व्याधियों से आक्रान्त हैं। तीनो प्रकार के ताप से भयाकुल हैं। इसमें मात्र एक ही कारण है वह पवित्रता का अभाव।

शुद्धता या पवित्रता की व्यवस्था करें तो - जंतु रहित बेकटेरिया रहित, प्रदूषण रहित - जिसे लेबोरेटरी में शुद्धता की जाय और वह शुद्ध साबित हो जाय और उपयोग में लाने सैजा हो जायेगा उसे शुद्ध कहते हैं। पवित्रता अर्थात् दोष रहित। जिसका लेबोरेटरी में जो जांच न हो सके, लेकिन उसका अनुभव किया जा सके। बाह्यशुद्धता को साफ सुथरा कहा जायेगा, जिसे हम अपनी आंखो से देख सकते हैं। जब कि अन्तर की पवित्रता को शुद्धता कहा जाता है। जिसे दिव्य आंखो से देखा जा सकता है। जिसकी अनुभूति मन से होती है।

पश्चिम की संस्कृति में शुद्धता को बहुत महत्व दिया जाता है। जब कि पूर्व की संस्कृति में मनुष्य को शुद्धता संस्कारों से मिला हुआ है। लेकिन पश्चिम की सभ्यात के आक्रमण से अपनी पवित्रता लुप्त होती जा रही है। इस पृथ्वी के सभी खंडो में दो भाग हो सकता है -

(१) पूर्व की संस्कृति वाला देश भारद देश।(२) पश्चि की संस्कृति वाला विस्तार अर्थात् अन्य देश। अर्थात् भोग भूमि। भारत देश कर्म भूमि के विस्तार में आया हुआ है। भारत की भूमि पर परमात्मा का वरदान है कि परमात्मा का अवतार जब भी होगा वह भारत भूमि पर होगा। इसलिये हम सभी महाभाग्य शाली है।

कलियुग के पहले के समय में मनुष्य के पहनावा का कोई ठिकाना नहीं था, उस समय शुद्धताभी नहीं थी। जब कि आज के समय में सभी का पहनावा अच्छा है फिर भी शुद्धता नहीं है। आज के मानव में दिखावा वाला काम अधिक हो गया है। देखने में अच्छा पहनावा है, अच्छा भोजन है, लेकिन नतो वस्त्र में शुद्धता है, नही खाने में शुद्धता है। इसी तरह वाणी में भी सुद्धता नहीं है। कथनी और करनी में फर्क हो गया है। शुद्धता तथा पपित्ररता दोनो शुद्ध हो तभी

सोने में शुगन्धवाली बात बनेगी । मात्र गंगाजल ही इस पृथ्वी पर शुद्ध है और कोई बाह्य जगत का पदार्थ शुद्ध नहीं है । गंगाजल को लेबोरेटरी में देखा गया तो वह शुद्धता की सीमा से कही आगे है । दीर्धशंका जाने के बाद लोग हाथ को साबुन से धोते हैं । बिना स्नान किये अपने कार्यमें लग जाते हैं । इसमें पवित्रता रहती ही नहीं है । इसलिये शुद्ध मिट्टी से हाथ धोयाजाय, पैर धोयाजाय तो शुद्धता कही जायेगी । कुछ भी स्नान के विना स्पर्श नहीं करना चाहिये । ऐसा करने पर पवित्रता कही जायेगी । घर में परमात्मा का मंदिर हो, नित्य सेवा करनी हो शुद्धता-पवित्रता से सेवा की जाय तभी परमात्मा स्वीकार करते हैं ।

गुजराती में कहावत है कि भणनार करता भणावनार ने खटको राखवानो । इसलिये हर समय सभी इन्द्रियों को शुद्ध रखना चाहिए । पवित्रता की दृष्टि से मानव के चार प्रकार है - (१) पामर (२) विषयी (३) मुमुक्षु (४) मुक्त । इस में से मुक्त - सब से उच्च स्थिति वाले होते है । जब मुक्त स्थिति को प्राप्त होते हैं, तभी जीवात्मा का कल्याण होता है । शुद्धता या पवित्रता - तन - मन - धन तीनो की होनी चाहिए । तभी मानव को शुद्ध कहा जायेगा । तन की शुद्धता के लिये साबुन-शेम्पु इत्यादि की जरुरत पड़ती है । स्पर्श दोष से दूर रखते पर तन की पवित्रता कही जायेगी मन की शुद्धता तथा पवित्रता के लिये सत्संग की जरुरत है । धन की शुद्धता के लिये दान करने की जरुरत है । शास्त्रो में सच्चे सत्पुरुष को माता की उपमा दी गई है । जिस तरह अपवित्र बालक को माता स्नान कराकर स्वच्छ कपड़ा पहना कर पिता के गोंद में रखती है, तभी उस बालक को खेलाने का मन उस पिता को होता है । इसी तरह माता रुपी सच्चा पुरुष-मुमुक्षु जीवात्मा अनेक आंतरिक अपवित्रता से घिरा होता है उसे सत्संग रुपी कथा के योग से अनेकानेक दोषों से मुक्त करके पवित्र करके पिता रुपी परमात्मा के हाथ में देते हैं । उस समय वह मुमुक्षुजीवात्मा रुपी बालक को परमात्मा रुपी पिता प्रसन्न होकर प्रेम करते हैं । मुक्त स्थिति को प्राप्त उस जीवात्मा का कल्याण हो जाता है । इस लोक में पवित्रता की जितनी आवश्यकता है उससे कई गुना इसलोक तथा परलोक में स्थाई सुख शांति, संतोष के लिये पवित्रता की आवश्यकता है । पवित्रता से परमात्मा तथा सत्पुरुषों की प्रसन्नता मिलती है । हम सभी को जितनी इन्द्रियां है उनका आहार पवित्रता ही है । शुद्ध रहने के लिये तन-मन-धन को पहले शुद्ध रखना होगा । चार प्रकार के मनुष्य में से - हम मुक्त स्थिति के मानव बने तथा दूसरों के लिये आदर्श रुप बनें । अपने मनुष्य जीवन को सच्चे अर्थ में चरितार्थ करें । इसके लिये दिव्य बुद्धि तथा अखंड सत्संग की जरुरत है । आप सभी के लिये परमात्मा श्री स्वामिनारायण भगावन के चरण कमल में प्रार्थना करते हैं कि वे आप सभी को शुद्ध विचार दे, जिससे आप सभी शुद्ध अन्तःकरण वाले होकर तन-मन धन को शुद्ध करके भगवत् भक्ति में तथा सत्संग में परायण हो । उन्हीं परमात्मा की शरणागति लेकर जीवन को सार्थक करें । चिंतमणी के समान इस मनुष्य शरीर को प्राप्त करके जो देवताओं को भी दुर्लभ है वही शरीर भरतखंड में प्राप्त करके शुद्धता-पवित्रता को सर्वोच्च स्थान पर रखकर जीवात्मा का कल्याण करें ऐसी प्रार्थना ।

बालवा में श्री स्वामिनारायण मासिक के ७० आजीवन सदस्य बने

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा समग्र धरमकुल की प्रसन्नता से तथा जेतलपुर धाम के पू. महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी की प्रेरणा से बालवा मंदिर के ११ वें वार्षिक ज्ञान यज्ञ प्रसंग पर श्री स्वामिनारायण मासिक अंक के कुल ७० आजीवन सदस्य बने । जिस में प्रत्येक सदस्य को २००/- रुपये का भेंट दिया गया था । प.भ. चौधरी धीरजभाई, चौधरी केविनभाई, चौधरी जेसंगभाई, चौधरी माधेवभाई, चौधरी दशरथभाई (अमेरिका), चौधरी जेसंगभाई, चौधरी रमणभाई, चौधरी सुरेशभाई इत्यादि लोगों ने सुंदर सेवा किया । धन्यवाद (श्री न.ना.देव युक मंडल - बालवा)

श्री स्वामिनारायण बलोल-भाल दशाब्दी पाटोत्सव प्रसंग पर श्री स्वामिनारायण अंक के आजीवन सदस्य बने

श्री स्वामिनारायण मंदिर बलोल-भाल के दशाब्दी महोत्सव प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से एवं प.भ. कांतिलाल केशरा भूडीया फोटडी (कच्छ) दीपपोलमीर श्री रजनीभाई, प.भ. रमेशभाई मेवाडा, तथा रमाबहन भट्ट के सौहार्द से कुल ५० श्री स्वामिनारायण अंक के आजीवन सदस्य बने हैं । अंक के प्रतिनिधियों को इससे प्रेरणालेनी चाहिए ।

सत्संग समाचार

कालुपुर अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में भव्य शाकोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की प्रसन्नता के साथ कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर के स.गु. महंत शा. स्वामी हरिकृष्णदासजी की प्रेरणा से तथा स.गु. पुराणी स्वामी भक्तिकिशोरदासजी, कोठारी जे.के. स्वामी, शा. नारायणमुनिदासजी आदि संत मंडल आदि के मार्गदर्शन से तथा सेवाभावी हरिभक्तो के साथ-सहकार से रंग महोल श्री घनश्याम महाराज के सानिध् यमें ता. १२-१-१६ को भव्य शाकोत्सव मनाया गया । अलौकिक शब्जियों का वघार पूज्य संतो के शुभ हाथो से किया गया । हजारोकी संख्या मे भाविक भक्तोने शाकोत्सव के दिव्य दर्शन का लाभ लेकर प्रसाद ग्रहण किया। (शा.स्वा. नारायणमुनिदास)

श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में कथा पारायण का आयोजन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से कालुपुर मदिर में पू. महंत स.गु. शा. स्वामी हरिकृष्णदासजी की प्रेरणा से ता. ३-१-१६ से ता. ५-१-१६ तक श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर श्री नरनारायणदेव के शुभ सानिध्य में मधुबहन पुरुषोत्तमदास मारफतिया परिवार (राजपुर) की तरफ से श्रीमद् भागवत दशम स्कंधत्रिदिनात्मक पारायण स.गु. शा.स्वा. विश्वविहारीदासजी गुरु महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी के वक्तापद पर सम्पन्न हुई । संतो-हरिभक्तो ने कथा श्रवण किया ।(शा.स्वा. नारायणमुनिदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट धनुर्मास धून का आयोजन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से, स.गु. महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी की प्रेरणा से श्री नारायणघाट मंदिर में धनुर्मास में ता. १६-१२-१५ से ता. १४-१-१६ तक प्रातः ५-१५ बजे मंगला आरती ६-०० से ६-३५ तक श्री स्वामिनरायण महामंत्र धुन की जाती थी । उसके बाद स.गु. निष्कुलानंद काव्य के अंतर्गत श्रीहरि स्मृति कथा स.गु.शा.स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर, गुरुकुल), शा. सिध्धेश्वरदासजी (उनावा) तथा शा. दिव्यप्रकाशदासजीने की । श्री रनारायणदेव युवक मंडलने सुंदर सेवा की । धून के बाद सभी युवक मंडल के भक्तो को हलुवा-पूडी का प्रसाद दिया गया ।

धनुर्मास में कालुपुर मंदिर के पू. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजीने आशीर्वाद के साथ श्री घनश्याम महाराज की तन-मन-धन से सेवा करने का अनुरोधकिया। (कोठारी स्वा. बालस्वरुपदासजी- नारायणघाट)

नारायणघाट मंदिर में स्नेह मिलन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट में ता. २-१-१६ को समस्त सत्संग समाज का स्नेह मिलन का सुंदर आयोजन स.गु. महंत स्वा. देवप्रकासदासजी तथा स.गु. महंत शा.पी.पी. स्वामी (गांधीनगर) तथा नारायणघाट युवक मंडल द्वारा किया गया ।

जिस का नारायणघाट मंदिर नियमित रुप से आनेवाले हरिभक्त गण तथा आस-पास विस्तार के हरिभक्तों ने लाभ लिया । कालुपुर मंदिर से संतोने पधारकर कथा-वार्ता का लाभ दिया । सुंदर भक्तिमय वातावरण में श्रीहरि नामस्मरण के साथ प्रसाद ग्रहण किया । संध्या आरती के दर्शन करके पुनः सभा में संतोने आगामी २४ फरवरी से २८ फरवरी तक मनाये जाने वाले घनश्याम महोत्सव की घोषणा की ।

(गोविंदभाई पटेल - नारायणघाट मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारणपुरा में भव्य शाकोत्सव मनाया गया

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारणपुरा में बिराजमान श्री घनश्याम महाराज की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से, समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से, मंदिर के महंत शा. हरिॐप्रकाशदासजी तथा संत मंडलके मार्गदर्शन से, हरिभक्तों के तन, मन, धन के सहयोग से ता. ३-१-१६ रविवार को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वाद से शाम को ५-०० बजे कीर्तनकार श्री हसमुख पाटडीया तथा श्री जयेशभाई सोनी के सुमधुर कंठ से कीर्तन संध्या का आयोजन किया गया । शा. घनश्यामस्वरुपदासजीने ज्ञान-वार्ता तथा जेतलपुर के शा.पी.पी. स्वामीने भगवत् कथा का लाभ दिया । साम को ६-३० बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आगमन होते ही पुष्प वृष्टि तथा ढोलक-शहनाई के साथ भव्य स्वागत किया गया । इस प्रसंग पर बड़ी संख्या में संतो तथा सांख्ययोगी बहने पधारी थी । सभा में शा. माधव स्वामी तथा यजमान परिवार ने धर्मकुल पूजन-संतपूजन किया । प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री का पूजन यजमान परिवार की बहनो द्वारा किया गया । अहमदाबाद के मेयरश्री आदि मेहमानों का सन्मान प.पू. आचार्य महाराजश्रीने किया । पाच हजार गरीबो के लिए प्रसाद तथा २५ हजार जितने हरिभक्तो के लिए शाकोत्सव का आयोजन किया गया । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने शाकोत्सव का अलौकिक बघार किया । रोटी की सुंदर सेवा आस-पास के विस्तार के तथा बाहरगाँव के बहन-हरिभक्तोने की ।

''शिर माटे सत्संग नामक रुपक'' नारणपुरा के युवकोने

सुंदर नाटक प्रस्तुत किया । ब्लड डोनेशन केम्प में कई युवान हरिभक्तोंने स्वेच्छिक ब्लड डोनेशन किया । इस प्रसंग पर हरिद्वार मंदिर के महंत मुकुन्द स्वामी, विशाल भगत आदि संत-पार्षदों की सेवा अद्‌भुत थी । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री विदेश से आज ही पधारे थे । स्वयंसेवको की सेवा प्रेरणारुपी थी ।

(कोठारी मयुर भगत)

श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच में शाकोत्सव एवम् पदयात्रा का आयोजन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से महंत स्वामी लक्ष्मणजीवनदासजी की प्रेरणा से ता. २७-१२-१५ से ता. ३-१-१६ तक प.भ. नागजीभाई शंगाल के श्रीजी फार्म कुबडथल में तथा प.भ. विनुभाई पडशाला के मारुतिनंदन फार्म पर उनके यजमान पद पर दिव्य सत्संग सभा तथा शाकोत्सव का आयोजन किया गया । कालुपुर मंदिर के पू. बलदेव स्वामी तथा हरिजीवन स्वामी और लसुन्द्रा गाँव के बाल मंडलने कीर्तन-भक्ति-धून की ।

आगामी श्री स्वामिनारायण म्युझियम के ५ वें वार्षिक स्थापना दिवस पर तथा एप्रोच मंदिर के ११ वें पाटोत्सव के उपलक्ष में ता. ६-१-१६ को ८०० जितने संतो-हरिभक्तों को एकादशी के दिन श्री नरनारायणदेव की श्रृंगार आरती के बाद पदयात्रा दर्शन का आयोजन किया गया है ।

ता. १०-१-१६ को श्री स्वामिनारायण मंदिर निकोल में आयोजीत शाकोत्सव प्रसंग पर एप्रोच श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने सुंदर सेवा की । नांदोल गाँव में शाकोत्सव प्रसंग पर प्रेरणात्मक नाटक तथा संतोने प्रासंगिक उद्‌बोधन किया । धनुर्मास में मंदिर में श्रीहरिकृष्ण लीलामृत सागर की कथा संतोने कही ।

(गोरधनभाई सीतापरा)

श्री नरनारायणदेव महिला मंडल साबरमती कथा पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री की प्रेरणा से साबरमती किनारे ता. ८-१-१६ से ता. १२-१-१६ तक स.गु. निष्कुलानंद स्वामी रचित श्रीमद् पुरुषोत्तम प्रकाश पंचान्हपारायण सांख्ययोगी बाईओं के वक्तापद पर सम्पन्न हुई । जिस में आनेवाले प्रसंग जेसे कि जन्मोत्सव, श्री नरनारायणदेव प्रतिष्ठा, रंगोत्सव, रासोत्सव, शाकोत्सव, समूह आरती, धर्मकुल पूजन आदि कार्यक्रम यजमानश्री की तरफ से किये गये । समस्त बहनोने प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री का चरणस्पर्श करके दर्शन करके गुरुमंत्र लिया था । (श्री नरनारायणदेव महिला मंडल, साबरमती)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोचरब पालडी शाकोत्सव का आयोजन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की शुभ आज्ञा से तथा समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से जेतलपुर के महंत स.गु.शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से अंजली मंदिर के महंत विश्वप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर कोचरब पालडी में ता. ९-१०-१५ को भव्य शाकोत्सव मनाया गया । इस प्रसंग पर जेतलपुर से पू.शा. पी.पी. स्वामी, पू. श्याम स्वामी, पू. भक्ति स्वामी तथा कांकरिया से महंत स्वामी गुरुप्रसाददासजी तथा आनंद स्वामी आदि संतगण पधारे थे।

संतो के साथ यजमान परिवार ने शाकोत्सव का वधार किया । पू. पी.पी. स्वामीने सभी हरिभक्तों को आशीर्वाद दिये । शाकोत्सव में सेवा करने वाली बहनो तथा स्वयं सेवको की सेवा प्रेरणारुप थी । (महंत स्वा. विश्वप्रकाशदासजी - अंजली)

श्री स्वामिनारायण मंदिर महादेवनगर शाकोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर महादेवनगर में ता. ६-१-१६ से ता. १०-१-१६ तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र की महिना के ऊपर पंचदिनात्मक कथा स्वा. सत्यसंकल्पदासजी तथा शा. सुव्रत स्वामीने कथा की ।

अंतिम दिवस पर ता. १०-१-१६ को महिला मंडल द्वारा महिला शिबिर तथा शाकोत्सव का आयोजन किया गया । इस प्रसंग पर बहनों की गुरु प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री सांख्ययोगी बहनो के साथ पधारी थी । सांख्ययोगी बहनोने कथावार्ता द्वारा भगवान की महिमा गान की । प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के शुभ हाथों से शाकोत्सव का दिव्य बधार किया गया । श्री नरनारायणदेव युवक मंडल तथा महिला मंडलने प्रेरणात्मक सेवा की । (कोठारी नटुभाई)

श्री स्वामिनारायण मंदिर आदिश्वरनगर नरोडा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से ता. २७-१२-१५ को श्री स्वामिनारायण मंदिर आदिश्वर नगर नरोडा में कालुपुर मंदिर के पू. बलदेव स्वामी तथा पू. हरिजीवन स्वामी की प्रेरणा से दिव्य शाकोत्सव का आयोजन किया गया । इस प्रसंग पर कालुपुर से पू. स्वामी जगतप्रकाशदासजी तथा वहेलाल, एप्रोच, बामरोली (एम.पी.) तथा दिल्ही से संतगण पधारे थे । सभा में निष्ठामें सर्वोपरिता तथा धर्मकुल की महिमा की बाते की गयी । शाकोत्व के मुख्य यजमान प.भ. अतुलभाई पटेल (एडवोकेट) आदिने सुंदर सेवा की ।

(कोठारी भीखुभाई डाभी)

हिरावाडी विस्तार में शाकोत्सव-सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से हिरावाडी विस्तार के श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के आयोजन से ता. १०-१-१६ को दिव्य चतुर्थ शाकोत्सव तथा प्रासंगिक सभा का आयोजन किया गया ।

इस प्रसंग पर अहमदाबाद मंदिर से पू. महंत स.गु. शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, शा. कूंजविहारीदासजी, माधव स्वामी, शा. छपैया स्वामी नारायणघाट से महंत स्वा. देवप्रकाशदासजी, शा.स्वा. दिव्यप्रकाशदासजी गांधीनगर (से-२) महंत शा. पी.पी. स्वामी, शा. चैतन्य स्वामी, सिध्धेश्वरदासजी, एप्रोच मंदिर से

धर्मनंद स्वामी आदि संतगण पधारे थे।

इस प्रसंग पर विशेष स्वरुप से प.पू. लालजी महाराजश्री संत-मंडल के साथ पधारे थे।

प्रसंग के मुख्य यजमानो में प.भ. परसोतमभाई टी. पटेल घनश्यामभाई जी. पटेल (विहारवाले) आदि प्रसंग का लाभ लिया । संतो के साथ यजमानोने श्रीहरिकृष्ण महाराज का अभिषेक किया संतो की प्रेरक वाणी के बाद प.पू. लालजी महाराजश्रीने अपने आशीर्वाद के साथ एक सुंदर हरि मंदिर की इसी विस्तार में स्थापना हो ऐसा संकल्प बताया। शाकोत्सव का बधार प.पू. लालजी महाराजश्री ने किया।

(गोरधनभाई सीतापरा)

नारणघाट मंदिर श्री घनश्याम महोत्सव के उपलक्षमें घाटलोडीया मंदिर में १५१ मिनिट की धून का आयोजन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से नारणघाट मंदिर के महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी की प्रेरणा से नारणघाट श्री स्वामिनारायण मंदिर का २७ वाँ पाटोत्सव एवम् श्री घनश्याम जन्मोत्सव (ता. २४-२-१६ से ता. २८-२-१६) के उपलक्ष में श्री स्वामिनारायण मंदिर घाटलोडिया में १५१ मिनिट की श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धून की गयी। नारणघाट मंदिर के शा. दिव्यप्रकाशदासजी, शा. स्वा. विश्वस्वरुपदासजी आदि संतोने सुंदर कथावार्ता का लाभ दिया। (श्री न.ना.देव युवक मंडल-घाटलोडीया)

श्री स्वामिनारायण मंदिर पेथापुर धनुर्मास धून का आयोजन

परमकृपालु परमात्मा श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपा से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से पेथापुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में समग्र धनुर्मास में इष्टदेव के विभिन्न अलौकिक वस्त्रो को दर्शन करवाया गया। महामंत्र धुन संतो-हरिभक्तों द्वारा की जाती थी।

(महंत स्वा. धर्मप्रवर्तकदास - पेथापुर)

बालवा गांव में श्रीराम चरित मानस ज्ञानयज्ञ एवम् शाकोत्सव मनाया गया

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से, प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी और स.गु. शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (जेतलपुर) की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर बालवा में १२ वाँ ज्ञानयज्ञ मनाया गया। उसी उपलक्ष में श्री रामचरित्त मानस सप्ताह पारायण ता. ४-१-१६ से ता. १०-१-१६ तक ब्र. स्वा. पूर्णानंदजी (ज्योतिषाचार्य जेतलपुर) ने कथामृत का पान करवाया कथा के यजमान गं.स्व. शांताबहन अमृतबाई चौधरी का परिवार था। अन्नकूट के यजमान दिलीपभाई तथा विनोदभाई माधवजीभाई चौधरी का परिवार था। पूर्णाहुति के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे। और मंदिर में ठाकुरजी की आरती उतारकर दिव्य शाकोत्सव का बधार किया।

इस प्रसंग पर स.गु. स्वा. जगतप्रकाशदासजी स्वा. विष्णुप्रसाददासजी (आदिवाडा) आदि संतोने प्रासंगिक प्रवचन किया। प.पू. आचार्य महाराजश्रीने आशीर्वाद दिये। इस ज्ञानयज्ञ में अहमदाबाद, जेतलपुर, महेसाणा, बापुनगर, गांधीनगर (से-२) सिद्धपुर, वाली, हिंमतनगर, प्रांतिज आदि स्थानो से संतगण पधारे थे।

समग्र प्रसंग जेतलपुर के महंतश्री के.पी. स्वामी के मार्गदर्शन अनुसार श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने सुंदर सेवा की। सभा संचालन महंत ब्र.स्वा. पवित्रानंदजी (धरियावद)ने किया। (श्री न.ना.देव युवक मंडल प्रमुखश्री बालवा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर माणेकपुर (चौधरी) श्री घनश्याम त्रिदशाब्दी महोत्सव के उपलक्ष में हुए कार्यक्रम का आयोजन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ आशीर्वाद से धर्मकुल की आज्ञा से पूज्य संतो की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून की गयी। उत्तरायण के दिन ठाकुरजी का ५६ वाँ अन्नकूट किया गया। जिसके यजमान चौधरी जोईताबा लवजीभाई के स्मरण निमित्त में कृते मेनाबहन गोपालभाई चौधरीने लाभ लिया। सं. २०७३ चैत्र शुक्ल पक्ष-९ को मंदिर का द्विदशाब्दी महोत्सव धूमधाम से मनाया गया। जिस के उपलक्ष में सभा करोड महामंत्र लेखन सवा वर्ष पर पूर्ण होगा। (समस्त सत्संग समाज कि तरफ से चौधरी डाह्याभाई शंभुभाई माणेकपुर)

हिंमतनगर मंदिर में शाकोत्सव का आयोजन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से ता. ३-१-१६ तक श्री स्वामिनारायण मंदिर हिंमतनगर में नूतन मंदिर के परिसर में भव्य शाकोत्सव मनाया गया। जिस में हिंमतनगर के प्रत्येक हरिभक्तो ने शाकोत्सव तथा कथावार्ता का लाभ लिया। समग्र आयोजन शा. प्रेमप्रकाशदासजीने किया था।

(रमेशभाई बी. पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर इलोल

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा हिंमतनगर मंदिर के महंत शा. प्रेमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से ता. ५-१-१६ को इलोल मंदिर में बिराजमान देवों का २३ वर्ष होने पर भव्य पाटोत्सव मनाया गया। इस प्रसंग पर सिध्धपुर, वडनगर, प्रांतिज तथा सापावाडा आदि स्थानों से संतगणो ने पधारकर अपनी अमृतवाणी का लाभ दिया। समग्र आयोजन हिंमतनगर मंदिर के महंत शा. प्रेमप्रकाश स्वामी तथा ईलोल मंदि के कोठारी किरीटभाई पटेलने किया था।

(रमेशभाई बी. पटेल)

बडे ईशनपुर (दहेगाँव) में भव्य सत्संग सभा का आयोजन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से, धर्मकुल के

आशीर्वाद से पू.पी.पी. स्वामी (गांधीनगर) की प्रेरणा से बड़े ईशनपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर ता. ११-१-१६ के रविवार को सत्संग सभा का आयोजन किया गया।

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट आयोजित श्री घनश्याम महोत्सव के उपलक्ष में होनेवाली २० सत्संग सभा में से एक सभा का आयोजन यहाँ भी किया गया। गाँव के तथा गाँव के बाहर के भक्तोंने सुंदर लाभ लिया।

इस सभा में संतो में शा. चैतन्य स्वामी, शा. कुंज स्वामी, हरिजीवन स्वामी, बलदेव स्वामी, परमहंस स्वामी आदि संत-मंडलने कथावार्ता की। सभापूर्ण होते ही टाकुरजी की आरती करके सभीने प्रसाद ग्रहण किया।

(सरपंचश्री, कोठारी, बड़ा ईशनपुर)

वडनगर मंदिर में पवित्र धनुरमास तथा शाकोत्सव धूमधाम से मनाया गया

ऐतिहासिक नगरी वडनगर में जहाँ भगवान श्री स्वामिनारायण ने ढाई महीने तक रहकर चातुर्मास की व्रतविधिका उपदेश देकर ब्रह्मभोज करवाया ऐसी पावन नगरी में श्री नरनारायणदेव गादी के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आशीर्वाद से महंत शा. नारायणवल्लभदासजी की प्रेरणा से कोठारी शा. विश्वप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन से पवित्र धनुर्मास में प्रातः ५-३० बजे मंगला आरती के दर्शन के बाद मंगल प्रभातफेरी निकला करती थी जिस में टाईसोर्स तीनसो जितने हरिभक्तो के साथ महंत स्वामीने भी ''स्वामिनारायण'' महामंत्र की धून के साथ विचरण किया। इसके ६-०० से ७-०० बजे तक मंदिर में ''स्वामिनारायण'' महामंत्र की धून की। ७-०० से ७-१५ तक ''वचनामृत की कथा'' की। प्रभातफेरी में विभिन्न विस्तार के हरिभक्तों ने पुस्तक, पेन, माला, गौमुखी तांबा के लोटे, लडु, आदी के वितरण की सेवा की। धनुर्मास में शा. अभिषेकप्रसाददासजी तथा पुजारी धर्मविहारी दासजी ने श्री घनश्याम महाराज के विभिन्न श्रृंगार के दर्शन करवाये।

ता. २४-१-१६ के रविवार को वडनगर श्री सहजानंद गुरुकुल में भव्य शाकोत्सव मनाया गया। जिस में मान. वडाप्रधान श्री नरेन्द्रभाई मोदी के ज्येष्ठ भाईश्री सोमाभाई मोदी, नगरपालिका के प्रमुखश्री सुनिलभाई महेता, डॉ. भरतभाई पटेल मोदी राजुभाई एड. आदि हरिभक्तो का मंदिर के महंत स्वामी तथा ट्रस्टी मंडलने स्वागत किया। शाकोत्सव में १५०० हरिभक्तोने प्रसाद ग्रहण किया।

इस शाकोत्सव प्रसंग पर श्री सोमाभाई डी. मोदी तथा मंदिर के ट्रस्टी श्री नवीनचंद्र एन. मोदीने प्रासंगिक प्रवचन द्वारा सत्संग प्रगति पथ पर चलता रहे और जीवन में सेवा का महत्व भी समझाया। इस शाकोत्सव में प.भ. कालीदास पटेल, प.भ. हसमुखभाई भावसार, प.भ. गुणवंतभाई भावसार, प.भ. बुधालाल पटेल तथा ट्रस्टी मंडलने अच्छी सेवा की। सभा का संचालन कोठारी शा. विश्वप्रकाशदासजीने किया।

(पू. धर्मविहारीदासजी - वडनगर)

वावोल गाँव मे शाकोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा गांधीगनर से-२ मंदिर के महंतश्री पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से तथा ग्रामजनो के आर्थिक तथा दैहिक सेवा के समन्वयसे ता. ९-१-१६ की सुबह को श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा शाकोत्सव का सुंदर आयोजन किया गया।

हरिभक्तोंने बड़ी संख्या में कथावार्ता के साथ प्रसाद का लाभ लिया।

सभा में कुंज स्वामी आदि संतोने सुंदर लाभ लिया श्री नरनारायणदेव युवक मंडल तथा महिला मंडल की सेवा प्रेरणारुप थी। (शा. चैतन्य स्वामी - गांधीनगर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मोटेरा में सप्ताह पारायण एवम् शाकोत्सव का आयोजन किया गया

श्रीजी महाराज के प्रसादी स्वरुप मोटेरा गाँव में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा पू. पी.पी. स्वामी (महंतश्री गांधीनगर) की प्रेरणा से ता. २७-१२-१५ से ३-१-१६ तक श्री श्री धीरजाख्यान शास्त्र का सप्ताह पारायण तथा भव्य शाकोत्व धूमधाम से मनाया गया। अंतिम दश वर्ष से धनुर्मास में कथा एवम् शाकोत्सव का सुंदर आयोजन किया गया।

इस वर्ष प.भ. रमेशभाई प्रहलादभाई मुखी परिवार कृते रतिभाई के यजमान पद पर सुंदर आयोजन किया गया। शा. स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी (गांधीनगर) कथा के वक्तापद पर बिराजमान थे।

इस प्रसंद पर यजमान परिवार के निवास स्थान पर प.पू. बड़े महाराजश्री की पधरावणी तथा महापूजा का आयोजन किया गया। पूर्णाहुति पर प.पू. लालजी महाराजश्री संत-मंडल के साथ पधारे थे।

संतो में स.गु. महंत स्वा. देवप्रकाशदासजी (नारायणघाट) स.गु. महंत सा.स्वा. हरिकृष्णदासजी आदि पधारे थे। प.पू. लालजी महराजश्री ने शाकोत्सव का अलौकिक वधार किया।

अंदाजित ९००० भक्तोंने प्रसाद ग्रहण किया। सभा संचालन शा. कुंजविहारी स्वामीने किया। समग्र प्रसंग में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल तथा महिला मंडलने प्रेरणारुप सेवा की। (कोठारीश्री-मोटेरा)

मुबारकपुरा गाँव में १२ घंटे की महामंत्र धून का आयोजन किया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से समस्त धर्मकुल की प्रेरणा से संतो के मार्गदर्शन से मुबारकपुरा गांव में ता. १४-१-१६ को उत्तरायण के पवित्र दिन धनुर्मास की पुर्णाहुति के उपलक्ष में सुबह के ६-०० से साम के ६-०० बजे तक महामंत्र धून की गयी।

इस प्रसंग में गांधीनगर मंदिर के महंत श्री पी.पी. स्वामी तथा शा. चैतन्य स्वामीने सभा में पधारकर स्वामिनारायण महामंत्र का माहात्म्य समझाया। संध्या बेलापर ठाकुरजी की आरती करके सभीने प्रसाद ग्रहण किया। (गोरधनभाई सीतापरा)

धरमपुर (गांधीनगर) गाँव में शाकोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से स.गु. शा. पी.पी. स्वामी (गांधीनगर) की प्रेरणा से नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर धरमपुर में ता. ९-१-१६ को भव्य शाकोत्सव मनाया गया।

सभा में कीर्तन भक्ति तथा संतो द्वारा कथा-वार्ता का सुंदर आयोजन किया गया। संतो में शा. स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी (गांधीनगर) शा. सिध्धेश्वरदासजी (उनावा) तथा हरिप्रसाद स्वामीने श्रीहरि की शुद्ध उपासना तथा सर्वोपरिताकी बातें कही। युवानो तथा महिला मंडलकी सेवा प्रेरणारुप थी।

(कोठारीश्री धरमपुर)

आणंदपुरा (कडी) में शाकोत्सव का आयोजन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से शा. सिध्धेश्वरदासजी की प्रेरणा से आणंदपुरा गाँव में ता. १३-१-१६ को सुंदर शाकोत्सव मनाया गया।

समग्र प्रसंग में युवानो तथा महिला मंडल की बहनोने सुंदर सेवा की।

इस प्रसंग पर महंतश्री पी.पी. स्वामी (गांधीनगर) शा. चैतन्य स्वामी, परमहंस स्वामी, घनश्याम स्वामी (कल्याणपुरा) ने कथावार्ता करके शाकोत्सव का सुंदर महिमा कही।(हरिभक्तोने बड़ी संख्या में प्रसंग का लाभ लिया। (कोठारीश्री, आणंदपुरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर (से-२) भव्य शाकोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के अलौकिक सानिध्य में तथा महंत शा.पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से तथा समस्त हरिभक्तों के सहयोग से श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर से-२ श्री घनश्याम महाराज के सन्मुख ता. १०-१-१६ रविवार को साम ५-०० बजे भव्य शाकोत्सव मनाया गया।

जिस के मुख्य यजमान प.भ. घनश्यामभाई रामभाई पटेल (जेतपुरावाले) ह. राज गांधीनगर परिवार थे। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने दिव्य आशीर्वाद दिये।

४८ गाँव के ८००० भक्तोंने दर्शन किया, कथा का पान करवाया। शाकोत्सव मनाया गया। समग्र प्रसंग में श्री नरनारयणदेव युवक मंडल तथा महिला मंडल की सेवा प्रशंसनीय थी। सभा संचालन शा. चैतन्य स्वामीने किया।

(घनश्यामभाई भंडेरी-गांधीनगर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर दहेगाँव का शाकोत्सव मनाया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से पू. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी तथा पू. महंत स्वा. देवप्रकाशदासजी तथा पू. महंत शा.पी.पी. स्वामी तथा कोठारी जे.के. स्वामी आदि संत मंडलकी प्रेरणा मार्गदर्शन से तथा दहेगाँव के समस्त हरिभक्तों के साथ-सहकार से श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा ता. १६-१-१६ को भव्य शाकोत्सव का आयोजन किया गया।

प्रसंग के प्रारंभ में युवक मंडल द्वारा कीर्तन भक्ति के बाद शा. विश्वविहारी स्वामी, शा. छपैयाप्रसाददासजी, शा. कूंज स्वामी, श्रीजी स्वामी आदि संतोने कथावार्ता की। बुजुर्ग संतो ने शाकोत्सव का बघार किया। समग्र प्रसंग में कोठारी हर्षदभाई, युवक मंडल तथा महिला मंडल की सेवा प्रेरणारुप थी। सभा संचालन शा. चैतन्य स्वामी (गांधीनगर) ने किया।

(प्रमुखश्री युवक मंडल देहेगाँव)

श्री स्वामिनारायण अंक न प्राप्त होने के विषय में

श्री स्वामिनारायण पत्रिका कुछ वर्षो से प्रत्येक महिने की ११ तारीख को नियमित रुप से पोस्ट की जाती है। और यदि किसी को कोई अंक की प्राप्ति न हो तो पोस्ट विभाग को शिकायत करें। यदि आपको २० तारीख तक अंक पत्र न प्राप्त हो तो प्रथम स्थानिक पोस्ट में शिकायत करके यहाँ के कार्यालय में जानकारी दे। यदि स्टोक में कोपी होगी तो पुनः भेजी जायेगी। (संचालकश्री)

श्री स्वामिनारायण मंदिर पंचवटी कलोल में शाकोत्सव मनाया गया

परमकृपालु श्रीजी महाराज की पूर्ण कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से कलोल पचंवटी निर्माणाधीन शिखरी श्री स्वामिनारायण मंदिर निर्माण कर्ता स.गु. महंत शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा.पी.पी. स्वामी (जेतलपुर) की प्रेरणा से महंत स्वा. विश्वप्रकाशदासजी (कलोल-अंजली) के मार्गदर्शन से प्रत्येक वर्षकी इस बार भी सुंदर शाकोत्सव ता. १२-१-१६ को धूमधाम से मनाया गया। कलोल युवक मंडल द्वारा कीर्तन भक्ति का आयोजन किया गया। संतोने अपनी अमृतवाणी का लाभ लिया।

हमारे भावि आचार्य प.पू.श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी भी प्रसंग में पधारे थे। यजमान परिवार द्वारा पूजन-अर्चन आरती के बाद प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों से शाकोत्सव का अलौकिक बघार किया गया। युवक मंडल तथा महिला मंडल की सेवा उत्तम थी। इस प्रसंग पर कालुपुर, जेतलपुर, कलोल, महेसाणा, मूली (सायला), सिद्धपुर, वाली, अंजली से संतगण पधारे थे। समग्र प्रसंग में महंतश्री के. पी. स्वामी, वी.पी. स्वामी (महंतश्री), महंतश्री नारणप्रसाद स्वामी आदि जेतलपुर संत मंडल की व्यवस्था का आयोजन उत्तम था। श्री नरनारायणदेव युवक मंडल तथा महिला मंडल की सेवा प्रेरणारुप थी। पंचवटी मंदिर निर्माण में अनेक हरिभक्तोंने उदारभाव से सेवा दी है।

(श्री नरनारायणदेव युवक मंडल कलोल-पंचवटी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर देलवाडा में शाकोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा स.गु. शा. वी.पी. स्वामी की प्रेरणा से महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी, अंजली मंदिर के महंत स्वा. विश्वप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर

देलवाडा में ता. ३-१-१६ को भव्य शाकोत्सव मनाया गया । ता. २-१-१६ को रात्रि में घनश्यामनगर (पटेल) माणेकपुर के युवक मंडल द्वारा कीर्तन-भक्ति का आयोजन किया गया । पूज्य संतो द्वारा शाकोत्सव का बघार करवाया गया । शा. भक्तिनंदनदासजी (जेतलपुर) ने कथा में शाकोत्सव की महिमा कही । यजमानो के सन्मान के बाद स.गु. मंहत शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजीने सभी को आशीर्वाद दिये । कालुपुर, जेतलपुर, महेसाणा, अंजली, काकंरिया मंदिर से संतगण पधारे थे ।

समग्र प्रसंग में महिला मंडल तथा युवानो की सेवा प्रेरणारुप थी । सभी भक्तोंने प्रसाद ग्रहण किया ।

(पटेल वसंतभाई देलवाडा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बड़े उभड़ा गाँव को भव्य प्रथम शाकोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से जेतलपुर के स.गु. महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी, स.गु. शा.स्वा. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर बड़े उभड़ा (ता. मांडल) गाँव में अलौकिक शाकोत्सव ता. ४-१-१६ को धूमधाम से मनाया गया । इस प्रसंग पर जेतलपुर, कालुपुर, अंजली आदि स्थानो से संतगण पधारे थे ।

शा.स्वा. भक्तिनंदनदासजीने शाकोत्सव के महिमा की बातें कही । उसके बाद संतो ने शाकोत्सव का अलौलिक वघार किया । अंत में यजमानो का सन्मान किया गया । प्रसंग पर सांख्ययोगी बहने भी पधारी थी । (महंत स्वा. विश्वप्रकाशदासजी - अंजली)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मांडल में भव्य शाकोत्सव का आयोजन किया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा जेतलपुर के समग्र संत-मंडल की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर मांडल में ता. १६-१-१६ को भव्य शाकोत्सव मनाया गया । भक्तों ने तन, मन, धन से सेवा की । शा. भक्तिनंदनदासजी ने कथा की । इस प्रसंग पर जेतलपुर, महेसाणा, अंजली मंदिर से संतगण पधारे थे । संतो ने शाकोत्सव धूमधाम से मनाया । मांडल गाँव के अलावा सेर, वगोद, ट्रेन्ट, सीतापुर छोटा उभड़ा बडा उभडा आदि गाँव के भक्तोने सुंदर लाभ लिया । समग्र प्रसंग में बहनो तथा युवक मंडल की सेवा प्रेरणारुपी थी । (कोठारीश्री, मांडल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर (बाईओका) लांघणज

प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर लांघणज के घनश्याम मंडल की बहनोने धनुर्मास में सुबह ६-०० से ६-३० श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून की । धून के बाद आरती करके श्रीहरि को भोग लगाया गया । एकादशी को दोपहर ३-०० से ५-०० तक बहनो को विशेष भजन-कीर्तन का कार्क्रम अविरत किया जाता है ।

(घनश्याम महिला, मंडल, लांघणज)

गांधीनगर सेक्टर-२३ को मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने पधरामणी की

भगवत् कृपा पर्व समापन के निमित्त पर ता. ६-१-२०१६ एकादशी को नियमित रुप से सुबह घनुर्मास की सभा में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । भावपूर्ण स्वागत के बाद प.पू. आचार्य महाराजश्रीने ठाकुरजी की आरती की । भक्तों द्वारा सभा में प.पू. आचार्य महाराजश्री का पूजन-आरती हुई ।

पूज्य आचार्य महाराजश्रीने आशीर्वाद देते हुए कहा कि -

''आज एकादशी है भगवान, संत, हरिभक्तों का सानिध्य है । यही अक्षरधाम का मध्य है । कथा-वार्ता के सिवाय जीव मे गुण नहीं आता । भगवान को साथ रखकर जीवन जीना इस युग में बड़ा कठिन है । शास्त्री स्वामी की खूबी है उन्होंने सभी को भगवान के सन्मुख रखा है । किसी प्रकार का कोई प्रतिबंधनही रखा है । स्वामी को प्रेमपूर्वक हरिभक्तों से कोई तकलीफ नहीं है । श्री नरनारायणदेव की छत्रछाया में सभी सुखी है । दृष्टांत के साथ निर्मानीभाव का महत्व समझाया ।

दुनिया में मेईन्टेनन्स की सुख एक भी नहीं है । ऐसा सुख स्वामिनारायण भगवान के दिये गये सदाचार के नियम का पालन करने वाले को ही प्राप्त होगा ।

गांधीनगर सत्संग समाज को दर्शन, आशीर्वाद देकर आचार्य महाराजश्रीने वहाँ से विदाई ली । हजारो हरिभक्तोने प्रसंग का लाभ लिया । (कोठारी, श्री स्वामिनारायण मंदिर सेक्टर-२३ गांधीनगर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर प्रांतिज

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से स्वा प्राणजीवनदासजीकी प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर प्रांतिज में सुदंर शाकोत्सव मनाया गया ।

इस प्रसंग पर सुरेन्द्रनगर, मूली, रतनपुर, हिंमतनगर, गांधीनगर तथा पेथापुर से संतगण पधारे थे । श्रीजी महाराज की महिमा की बातें संतोने कही । श्री कनुभाई पंड्या मुख्य यजमान थे । समग्र आयोजन सा. गोपालजीवनदासजीने किया ।

नारायणघाट मंदिर श्री घनश्याम महोत्सव के उपलक्ष में १५१ मिनिट की धून का आयोजन

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट के आगामी २० वे पाटोत्सव एवम् श्री घनश्याम महोत्सव के उपलक्ष में प्रांतिज मंदिर में संतो-हरिभक्तों ने श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धून की । नारायणघाट से पधारे शा.स्वा. दिव्यप्रकाशदासजी ने तथा गोपाल स्वामीने सुंदर कथा-वार्ता की । (दिनेश भगत - मनन प्रांतिज)

श्री स्वामिनारायण मंदिर महेसाणा शाकोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से, जेतलपुर के पू. शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी (महंतश्री) तथा पू. पी.पी. स्वामी (जेतलपुर) की प्रेरणा से महेसाणा मंदिर के महंत स्वा. नारायणप्रसाददासजी तथा शा. उत्तमप्रियादसजी के मार्गदर्शन से

ता. १०-१-१६ को महेसाणा मंदिर के प्रांगण में अलौकिक शाकोत्सव मनाया गया । संतो के वरद् हाथों से ठाकुरजी की आरती तथा शाकोत्सव का बघार करवाया गया । सभी भक्तोने तन, मन, धन से सेवा की । संतो के प्रेरक वचन के बाद ठाकुरजी का शाकोत्सव का महापर्साद हजारो भक्तोने ग्रहण किया ।

(शा. भक्तिनंदनदासजी, जेतलपुर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट के आगामी २० वें पाटोत्सव एवम् श्री घनश्याम जन्मोत्सव के उपलक्ष में आयोजित कार्यक्रम

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. लालजी महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से स.गु. महंत स्वामी देवप्रकासदासजी तथा महंत शा.पी.पी. स्वामी (गांधीनगर महंतश्री) की प्रेरणा से निम्न गाँव में १५१ मिनिट की महामंत्र धून तथा पदयात्रा संतो-हरिभक्तोने की ।

(१) नारायणघाट मंदिर से कालुपुर मंदिर पदयात्रा

श्री स्वामिनाराय मंदिर नारायणघाट से महंत स्वामी - संत मंडल श्री नरनारायणदेव युवक मंडल तथा सेंकडो हरिभक्तोने कालुपुर मंदिर धनुर्मास में श्री नरनारायणदेव के दर्शन हेतु पदयात्रा आयोजित की गयी । (सुधीरभाई पटेल)

(२) करशनपुरा गाँव में १५१ मिनिट की धून का आयोजन

श्री स्वामिनारायण मंदिर करशनपुरा में सभी भाइयों तथा बहनोने मिलकर श्री स्वामिनारायण महामंत्र की १५१ मिनिट की धून की गयी । जिस में बाहर गाँव के कई भक्त भी जुडे थे । (शा. दिव्यप्रकाशदास - नारायणघाट)

(३) हिरावाडी मंदिर में १५१ मिनिट की धून का आयोजन

श्री स्वामिनारायण मंदिर हीरावाडी अहमदाबाद में हरिभक्तो तथा संतोने साथ मिलकर १५१ मिनिट की महामंत्र धून की, इस प्रसंग पर नारणघाट से शा. दिव्यप्रकाश स्वामी तथा गांधीनगर (से-२) से शा. चैतन्य स्वामीने कथा-वार्ता की ।

(कौशिकभाई पटेल - हीरावाडी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर, धोलका

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा धोलका मंदिर के मंहत स्वामी पूर्णप्रकाशदासजी की प्रेरणा से श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा दर पंदर दिवस पर धोलका के भिन्न-भिन्न हरिभक्तों के घर सत्संग सभा की गयी । जिस में संतोनमे कथा-वार्ता का लाभ देकर धून-भजन-कीर्तन किया गया । (राकेशभाई सोनी धोलका)

श्री स्वामिनारायण मंदिर आकरुंद (ता. बायड) मूर्ति प्रतिष्ठा का आयोजन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से मथुरा मंदिर के महंत शा.स्वा. अखिलेश्वरदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर आकरुंद मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव ता. १३-१२-१५ को धूमधाम से मनाया गया ।

इस प्रसंग पर त्रिदिनात्मक महा विष्णुयाग श्रीमद् भागत दशम स्कंधत्रिदिनात्मक पारायण स.गु. शा.स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल) तथा स.गु.शा. स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी (गांधीनगर)ने संगीत के साथ कथामृत का पान करवाया । सभा संचालन शा.स्वा. विश्वस्वरुपदासजीने किया । संतो-महंतोने पधारकर समस्त सभा को अपनी अमृतवाणी का लाभ दिया । उत्सव के तीन दिन तक समस्त गाँव तथा मेहमानो को प्रसाद दिया गया । ठाकुरजी की नगरयात्रा में संतो के साथ गाँव तथा आस-पास के गाँव के भक्तोने लाभ लिया । श्री नरनारायणधेव युवक मंडल-बालकोने, बुर्जुगोने श्रद्धा भक्ति से नगरयात्रा में भाग लिया । ठाकुरजी की श्रृंगार-आरती-अन्नकूट की सेवा स्वयं सेवको के साथ पूजारी विश्वेश्वरदासजी तथा चराडवा के कोठारी ब्रह्मविहारी स्वामीने की ।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने ठाकुरजी की प्राण प्रतिष्ठा के बाद यज्ञ की पूर्णाहुति की ।

सभी यजमानो का प.पू. महाराजश्रीने शाल ओढाकर सन्मान किया ।

श्री देवेन्द्र पटेल (पत्रकार संदेश पेपर) ने प्रासंगिक उद्बोधन किया । संतोने भी पधारकर प्रासंगिक उद्बोधन किया । अंत में प.पू. आचार्य महाराजश्रीने आलौकिक आशीर्वाद दिये ।

प्रसंग में मथुरा के कोठारी स्वा. सर्वेश्वरदासजी, को प्रेमजीभाई, सलीलभाई, चंद्रेशभाई, दिनेशभाई युवक मंडल तथा हरिभक्तोंने सुंदर सेवा की । हसमुखभाई पटेलने आभार विधिकी ।

(कोठारी सर्वेश्वरदास)

श्री स्वामिनारायण मंदिरकालीयाणा वार्षिक पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री तथा प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप बड़ी गादीवालाश्री एवम् समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से जेतलपुर के पू. शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी (महंतश्री) तथा प.शा.स्वा. वी.पी. स्वामी के मार्गदर्शन से कालीयाणा बहनो के मंदिर की पुजारी सां. बबुबाई गुरु शा. मणीभाई के शुभ संकल्प से श्री स्वामिनारायण मंदिर कालीयाणा के पाटोत्सव के उपलक्ष में १२ घंटे की महामंत्र धून-भजन कीर्तन किया गया ।

इस प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री गाँव से २ कि.मी. धाकडी से श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के १०१ युवानोंने मोटर सायकल के साथ भव्य स्वागत के साथ आगमन किया । मंदिर में पधारकर ठाकुरजी की आरती करके श्री अन्नपूर्णेश्वर महादेवजी की आरती की ।

प्रासंगिक सभा में कोठारीश्री, सरपंचश्री तथा गाँव के बुर्जुग हरिभक्तोंस्त्रने प.पू. आचार्य महाराजश्री की आरती करके आशीर्वाद लिये । मंदिर के नये सभागृह में पधरामणी की । प्रासंगिक सभा में जेतलपुर मंदिर के महंत पू. शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा नारणपुरा के महंतश्री हरिॐ स्वामीने गाँव की निष्ठा सेवा की प्रशंसा की । अंत में प.पू. आचार्य

महाराजश्रीने सभी को आशीर्वाद दिये। बहनो को दर्शन आशीर्वाद देने हेतु प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री भी पधारी थी। सभा संचालन शा.स्वा. भक्तिनंदनदासजी (अंजली मंदिर)ने किया। धनुर्मास में प्रभातफेरी धून-कथा-वार्ता का आयोजन किया गया।

(अरजणभाई गो. मोरी)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

मूली श्री राधाकृष्णदेव के स.गु. देवानंद स्वामी के बलोल (भाल) श्री स्वामिनारायण मंदिर दशाब्दी महोत्सव

परम कृपालु इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान की असीम कृपा से तथा उनके ही अपर स्वरुप श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. महंत स्वामी धर्मस्वरुपदासजी (नाथद्वारा) तथा हजुरी पार्षद वनराज भगत की प्रेरणा से समस्त हरिभक्तों के साथ-सहयोग से श्री स्वामिनारायण मंदिर बलोल का दशाब्दी महोत्सव ता. ३-१-१६ से ता. ७-१-१६ तक धूमधाम से मनाया गया।

इस प्रसंग के उपलक्षमें ता. ३-१-१६ से ता. ७-१-१६ तक स.गु. शा.स्वा. वासुदेवचरणदासजी (नाथद्वारा) के वक्तापद पर श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचान्ह पारायण सम्पन्न हुआ। ता. २-१-१६ को बहनो के स्वामिनारायण मंदिर से उत्सव स्थान तक भव्य पोथीयात्रा धून-कीर्तन के साथ नीकाली गयी। बलोल गाँव के सत्संगी महिला मंडल मुख्य यजमान थे। (ह. सां. अमरबाई) ता. ३-१-१६ से ता. ६-१-१६ तक व्याख्यान माला में शाम को शा.स्वा. उत्तमप्रियादसजी (चराडवा महंतश्री), शा.स्वा. भक्तिनंदनदासजी (मोरबी महंतश्री), शा.स्वा. हरिप्रकाशदासजी (धोलेरा महंतश्री), शा.स्वा. विश्वविहारीदासजी (अमदाबाद) ने विषयानुसार कथा की। बहनों की गुरु प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री तथा प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाश्रीने भी पधारकर दर्शन-आशीर्वाद का सुख दिया। अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने पधारकर हरिकृष्ण महाराज का षोडशोपचार विधिकरके दोनो मंदिरो में ठाकुरजी की अन्नकूट की आरती करके यजमानश्री केशुभाई कानाभा सिंधव के निवास स्थान पर पधारे थे। वहाँ से सभा में पधारकर सभी यजमानो का सन्मान करके गाँव में विशेष सत्संग की उन्नति-प्रगति की निष्ठा में वृद्धि हो ऐसे आशीर्वाद दिये। इस प्रसंग पर सर्व निदान केम्प का आयोजन किया गया। १०० जितने पूजनीय संत गणने पधारकर आशीर्वाद दिये।

समग्र प्रसंग का सभा संचालन पू. शा.स्वा. हरिप्रकाशदासजी (मकनसर महंतश्री)ने किया। भक्तोंने तन-मन-धन से सेवा की। (माधव स्वामी - अहमदाबाद)

मूली ज्ञानवाव में भव्य शाकोत्सव का आयोजन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से मूली के महंत स्वामी श्यामसुंदरदासजी की प्रेरणा से मूली मंदिर की महा प्रसादीस्वरुप ज्ञानवाव में सुरेन्द्रनगर मंदिर द्वारा ता. १७-१-१६ को भव्य शाकोत्सव धूमधाम से मनाया गया।

इस प्रसंग पर सभा में शा. घनश्याम स्वामी, बालु स्वामी, महंत शा.स्वा. भक्तिनंदनदासजी (मोरबी), के.पी. स्वामी, मूली के महंत स्वामीने कथावार्ता की। मूली के हरिभक्तगण तथा सुरेन्द्रनगर, लींबडी, मोरबी और ध्रांगध्रा से सांख्ययोगी बहने पधारी थी। रसोई की सेवा में कृष्णवल्लभ स्वामी के मार्गदर्शन से व्रज स्वामी, ज्ञान स्वामी, हरिकृष्ण स्वामी तथा भरत भगत ने सेवा की। शाकोत्सव का प्रसाद ग्रहण किया। (शैलेन्द्रसिंह झाला)

सूर्यनगर (हलवद) गाँव में सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा धर्मकुल के आशीर्वाद से मूली के श्री राधाकृष्ण के सूर्यनगर गाँव में ता. २३-१२-१५ को नारायणघाट मंदिर श्री घनश्याम महोत्सव के उपलक्ष में २० सत्संग सभा से एक सत्संग सबा का आयोजन किया गया। जिस में गांधीनगर महंतश्री पी.पी. स्वामी, शा. स्वा. रामकृष्णदासजी आदि संत मंडलने ता. २४-२-१६ से ता. २८-२-१६ को नारायणघाट मंदिर में आयोजित महोत्सव की रुपरेखा गाँव के तथा अन्य विस्तार के हरिभक्तों को समझायी। श्रीहरि की आरती करके सभीने प्रसाद ग्रहण किया।

(शा. चैतन्य स्वामी - गांधीनगर)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर इटास्का-शिकागो

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से, महंत शा.स्वा. यज्ञप्रकाशदासजी की प्रेरणा से शिकागो मंदिर में धनुर्मास धून महोत्सव धूमधाम से मनाया गया। प्रातः इतनी ठंडी में भी हरिभक्तगण दर्शन और धून करने के लिए पधारते थे। सत्संग शिबिर में भी भक्तों की भीड होती थी।

श्री नरनारायणधेव युवक मंडल तथा महंत स्वामी की प्रेरणा से मकर संक्राती के दिन सत्संग-सभा में कीर्तन-भजन-धून कथा का आयोजन किया गया। अंत में सभी को संतो के आशीर्वाद प्राप्त हुए।

हरिकृष्णभाई, हिरेन पटेल, मितुल राव, विवेक ब्रह्मभट्ट, जगदीशभाई पटेल आदि नामी-अनामी भक्तो-बहनो ने प्रेरणारुप सेवा की। (वसंत त्रिवेदी)

समस्त सत्संग के लिये सूचना

सभी सत्संग समाज को सूचित किया जाता है कि आगामी प्रकाशित होने वाली मासिक पत्रिका अंक में हरिभक्तों की ''श्रध्धांजलि'' कोलम अब प्रकाशित नहीं होगी। इसकी विशेष नोंट ले।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

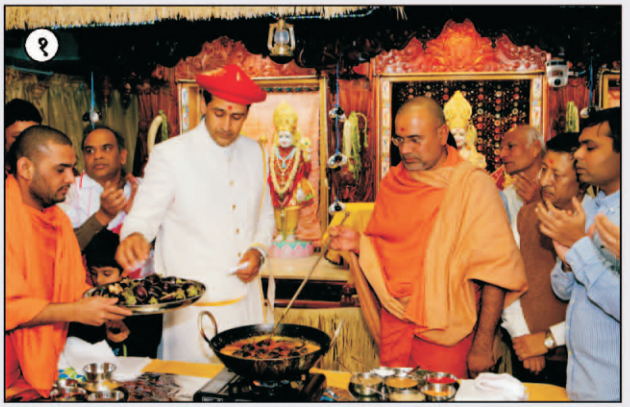

(૧) अपने टोरेन्टो मंदिर में शाकोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी के समक्ष शाक का वघार करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री साथ में पू. पी.पी. स्वामी । (૨) गांधीनगर सेक्टर-૨૩ मंदिर में भगवत कृपा पर्व प्रसंग पर वचनामृत दृष्टांत कथा पुस्तक का विमोचन करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री साथ में शा. स्वा. हरिकेशवदासजी । (૩) बलोल (भाल) मंदिर के दशाब्दी महोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी का अभिषेक करते हुये प.पू. आचार्य महाराजश्री। (૪) नारायणघाट मंदिर में स्नेह मिलन प्रसंग पर सभा में आशीर्वाद देते हुए पू. महाराजश्री साथ में कालुपुर तथा नारायणघाट मंदिर के महंत स्वामी । (૫) मोटेरा गाँव में धीरजाख्यान कथा प्रसंग पर व्यासपीठ का पूजन करते हुए पू. लालजी महाराजश्री साथ में यजमानश्री । (૬) नरोडा आदिश्वर नगर मंदिर में शाकोत्सव प्रसंग पर आयोजित सभा में संत।

પ.પૂ.ધ.ધુ.૧૦૦૮ આચાર્યશ્રી કોશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રીના આશીર્વાદાત્મક આજ્ઞાથી
શ્રી સ્વામિનારાયણ ભગવાનના ચરણારવિંદથી અંકિત પ્રસાદિની ભૂમિ શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર,
કાંકરીયાધામના આંગણે ભવ્ય વાર્ષિક પાટોત્સવ તથા કથા પારાયણ એવમ્

શહેર ચોર્યાસી મહોત્સવ

તા. ૦૭ થી ૧૩ માર્ચ ૨૦૧૬ ફાગણ સુદ પાંચમ

આયોજક : સ.ગુ.શા.મહંત સ્વામી ગુરૂપ્રસાદ દાસજી
સ.ગુ.શા.મહંત સ્વામી આનંદપ્રસાદ દાસજી

પારાયણ તથા મહોત્સવ સ્થળ : શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, રામબાગ, કાંકરીયા, અમદાવાદ. ફોન.નં - ૦૧૯-૨૫૪૩૦૪૯૦

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month
under postal Regd. No. GUJ. 581/15-17 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2017

શ્રી નરનારાયણદેવનો ૧૯૪મો પાટોત્સવ

ફાગણ સુદ - 3 તા.૧૧-૩-૨૦૧૮ શુક્રવાર

એવંમ્

શ્રીમદ્ સત્સંગિ ભૂષણ પંચાન્હ પારાયણ

પ્રારંભ
તા.૭-૩-૨૦૧૮
સોમવાર

પૂર્ણાહુતિ
તા.૧૧-૩-૨૦૧૮
શુક્રવાર

કથા સમય દરરોજ સવારે ૬:૦૦ થી ૮:૦૦

આયોજકઃ-મહંત શા.સ્વામી હરિકૃષ્ણદાસજી, શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, કાલુપુર, અમદાવાદ

શ્રી સ્વામિનારાયણ મ્યુઝિયમ

પંચમ વાર્ષિકોત્સવ

ફાગણ સુદ - 3
તા. ૧૧-૩-૨૦૧૮
શુક્રવાર

મહાપૂજાના યજમાન રૂા. ૨૫૦૦૦
મહાપૂજા સહ યજમાન રૂા. ૧૧૦૦૦
તેમજ સંતો-ભક્તોના ભોજનપ્રસાદમાં વસ્તુ સ્વરૂપે
યથા શક્તિ સેવા નોંધાવી શકાય છે.

કાર્યક્રમ

સમૂહ મહાપૂજા
સમય બપોરે ૨-૦૦ થી ૪-૦૦
સ્થળઃ શ્રી સ્વામિનારાયણ મ્યુઝિયમ
ટર્ફ સ્કૂલની સામે, ટોરેન્ટ પાવરની ઝોનલ ઓફિસ પાછળ,
નારણપુરા, અમદાવાદ-૧૩

સત્સંગ સભા તથા દાતાઓનું સન્માન અને આશીર્વચન
સમય સાંજે ૪-૩૦ થી ૬-૩૦
ભોજન પ્રસાદ સાંજે ૬-૩૦
સ્થળ : ગોપી પાર્ટી પ્લોટ,
ઓંગણજ ચાર રસ્તા પાસે, રીંગરોડ, અમદાવાદ

સંપર્ક : મ્યુઝિયમમાં રૂબરૂ અથવા ફોનથી ૦૭૯ ૨૭૪૮૯૫૯૭ મો.: ૯૮૭૯૫ ૪૯૫૯૭ તથા મો.નં. ૯૯૨૫૦ ૪૨૬૮૬ (દાસભાઈ)

Prafull Kharsani